हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार 22 फरवरी 2026

9 खुले मेनहोल व नाले ले रहे मासूम बच्चों की जान

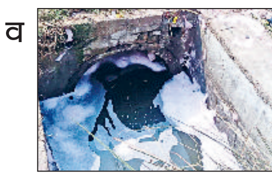

10 नूना माजरा में महिला फुटबॉल स्पर्धा का आगाज

खबर संक्षेप

खेल नर्सरी के लिए आज आवेदन का अंतिम दिन

झज्जर। जिला खेल अधिकारी सत्येन्द्र कुमार ने बताया कि खेल विभाग हरियाणा द्वारा सत्र 2026-27 में खेल नर्सरी आवंटन के लिए सरकारी स्कूलों, ग्राम पंचायतों एवं निजी शिक्षण संस्थानों से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। जिसके लिए आवेदन की अंतिम तिथि 22 फरवरी है। संस्थान विभाग की वेबसाइट एचटीटीपी://डब्ल्यूडब्ल्यूडब्लय.हरयाणास्पोर्टस.जीओवी.इन पर निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

नशीली गोलियों सहित एक आरोपी पकड़ा

झज्जर। सीआईए की एक टीम द्वारा नशीली गोलियों सहित एक आरोपी को पकड़ा गया है। सीआईए प्रभारी निरीक्षक कर्मवीर ने बताया कि सूचना मिली कि चिराग निवासी दमदमा मोहल्ला नशीली गोलियां बेचने की फिराक में प्राचीन हनुमान मंदिर के पास खड़ा हुआ है। पकड़े गए आरोपी की नियमानुसार तलाशी लेने पर नशे की 30 गोलियां बरामद हुईं।

कुरुक्षेत्र में 23 फरवरी से होगा सांग महोत्सव

झज्जर। एडीसी जगनिवास ने बताया कि कुरुक्षेत्र में 23 से 27 फरवरी तक पांच दिवसीय सांग महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। धनपत सिंह सांग स्मृति पुरस्कार के उपलक्ष्य में यह कार्यक्रम प्रतिदिन सुबह 11 बजे से कलाकृति भवन, हरियाणा कला परिषद नजदीक ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र में होगा।

न्यू बसंत विहार में सो रहे परिवार के कमरों पर चोर ने कुंडी लगा की वारदात

दिल्ली पुलिस के जवान व फौजी के घर चोरी 20 तोले सोना व 10 लाख नकदी ले गया चोर

- गहनों की अलमारी वाले कमरे में अकेला सो रहा था मुखिया, लघुशंका के लिए उठा तो पीछे से घुसा चोर
- चोर दीवार फांदकर खाली प्लाट के रास्ते से भागा, एक बंद पड़े मकान में भी किया चोरी का प्रयास

बहादुरगढ़। चोरी के बाद अलमारी दिखाते मालिक।

पुलिस शक की निगाह से भी देख रही मामला, जांच जारी

सूचना पाकर पुलिस हरकत में आई। सिटी थाना, सीआईए व एवीटी की टीम मौके पर जांच करने पहुंची। शनिवार को कई घंटे तक पुलिस मौके पर रही। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज खंगाली व पीड़ित परिवार सहित आसपास के लोगों से पूछताछ की। फॉरेंसिक टीम भी साक्ष्य जुटाने मौके पर पहुंची। प्रारंभिक तौर पर फुटेज में दिखाई दिए एक ही युवक द्वारा वारदात किए जाने की बात सामने आ रही है। हालांकि अब तक सामने आई चोरी से संबंधित थ्योरी पुलिस के गले से नहीं उतर रही। इसलिए पुलिस विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए जांच आगे बढ़ा रही है। फुटेज में नजर आए संदिग्ध युवक की पहचान कर पुलिस उस तक पहुंचने के प्रयास कर रही है। जांच के बाद ही मामले की असल सच्चाई सामने आ सकेगी। उधर, सिटी एसएचओ जमील अहमद का कहना है कि रात को मकान में चोरी की सूचना मिली थी। मामले में जांच की जा रही है। जल्द से जल्द इस केस को सुलझाने का प्रयास रहेगा।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शहर के न्यू बसंत विहार में चोरी का बड़ा मामला सामने आया है। यहां दिल्ली पुलिस कर्मी के मकान से करीब 20 तोला सोना व 250 ग्राम चांदी के आभूषणों सहित करीब दस लाख रुपये की नकदी चोरी हुई है। वहीं, सामने स्थित एक बंद मकान को भी निशाना बनाने का प्रयास किया गया है। सिटी थाना, सीआईए व एवीटी सहित पुलिस की कई टीमें मामले में छानबीन कर रही हैं। आसपास सीसीटीवी फुटेज खंगाली जा रही है। फुटेज में एक संदिग्ध युवक नजर भी आया है।

वारदात न्यू बसंत विहार की गली नंबर-3 में स्थित बलराम के मकान में हुई है। बलराम का एक बेटा विकास आर्मी में है तो दूसरा बेटा विक्रम दिल्ली पुलिस में तैनात है। बताया जा रहा है कि परिवार के तमाम सदस्य शुक्रवार की रात को खाना खाकर सो गए। मुख्य गेट के पास बने कमरे में बलराम चारपाई पर सो रहे थे। उनके कमरे में ही अलमारी है, जिसमें पूरे परिवार के आभूषण व कैश रखा हुआ था। बलराम जब रात करीब एक बजे लघुशंका के लिए उठे हुए तो संभवतः इसी दौरान वारदात हो गई। उन्होंने शोर मचाया तो एकाएक चोर गेट कूदकर भाग गया। इसके बाद परिवार के तमाम सदस्य व आसपड़ोस के लोग हरकत में आए। बताया जा रहा है कि शातिर चोर ने पीड़ित परिवार व आसपास के अन्य मकानों के बाहर की कुंडी लगा दी थी। वारदात के बाद एक खाली प्लॉट के रास्ते वहां से चंपत हो गया। एक सीसीटीवी में युवक मकान की तरफ आता और फिर वारदात के बाद भागता नजर भी आया है। पीड़ित परिवार के मुताबिक, अलमारी की चाबी वहीं रखी थी। अलमारी खोलकर चोर 20 तोला सोने व 250 ग्राम चांदी के आभूषण तथा दस लाख की नकदी ले गया है। सामने स्थित एक अन्य मकान में भी वारदात की कोशिश की गई है।

शहीदी पार्क के पास कार व बाइक की टक्कर

तेज रफ्तार कार गार्ड को घसीटते हुए ले गई, मौत

- सड़क के दूसरी ओर डिवाइडर फांदकर नाले में अटकी कार, आरोपी परिवार मौके से फरार

हादसे के बाद क्षतिग्रस्त वाहन।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

शहर के बहादुरगढ़ मार्ग पर शहीदी पार्क के नजदीक हुए सड़क हादसे में एक गाड़ी की टक्कर से मोटरसाइकिल सवार व्यक्ति की दर्दनाक मौत हो गई। शव से मिले दिल्ली ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन के आईकार्ड के आधार पर मृतक की पहचान मूल रूप से महराणा गांव निवासी सत्यवीर सिंह पुत्र रामकिशन के तौर पर हुई है। वह डीटीसी में सिक्योरिटी गार्ड थे और सुर्खपुर मोड़ पर कॉलोनी में रहते थे।

शनिवार दोपहर करीब पौने चार बजे सत्यवीर सिंह शहीदी पार्क के साथ लगती कॉलोनी से निकलकर मोटरसाइकिल से बहादुरगढ़ मार्ग पर पहुंचे थे। तभी एक गाड़ी सत्यवीर सिंह को मोटरसाइकिल सहित दूर तक घसीटती ले गई। इस दौरान जहां सत्यवीर सड़क के बाईं तरफ ही गिर गए वहीं गाड़ी मोटरसाइकिल सहित डिवाइड से कूदते हुए दाईं तरफ सड़क के दूसरे किनारे बने नाले पर जा अटकी।

गाड़ी के एयरबैग खुले : कार की गति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि गाड़ी के सभी एयर बैग खुल गए। गाड़ी में दो महिलाएं, एक बुजुर्ग व्यक्ति व एक युवक था, जो मौके से भाग निकले।

ब्रेकर बनाने की मांग

लोगों का कहना है कि पहले चौक पर दोनों तरफ ब्रेकर बने हुए थे जिस कारण गाड़ियों की रफ्तार संतुलित हो जाती थी। अब सड़क बनने उपरांत ये ब्रेकर लगभग समतल हो गए हैं। इन्हें दोबारा बनाने की मांग की है ताकि हादसों पर रोक लगाई जा सके।

सिंगर मासूम शर्मा को सरपंचों ने दी चेतावनी, बोले-माफी मांगें

- जींद में पूर्व सरंपच के साथ विवाद के मामले ने पकड़ा तूल

झज्जर। मामले को लेकर चर्चा करते हुए सरपंच एसोसिशन के पदाधिकारी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

हरियाणवी गायक कलाकार मासूम शर्मा को झज्जर सरपंच एसोसिएशन ने चेतावनी देते हुए सार्वजनिक रूप से माफी मांगने की मांग की है। झज्जर सरपंच एसोसिएशन के प्रधान बलवान सिंह ने कहा कि यह मामला केवल झज्जर तक सीमित नहीं रहेगा। प्रदेश कमेटी से बातचीत कर प्रदेशभर में मासूम शर्मा के कार्यक्रमों का विरोध किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जब तक मासूम शर्मा सरपंचों से माफी नहीं मांगते, तब तक उन्हें जिले में किसी भी प्रकार का कार्यक्रम आयोजित नहीं करने दिया जाएगा। बता दें कि हाल ही में जींद में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान मासूम शर्मा पर पूर्व सरपंच के साथ अभद्र व्यवहार करने और सरपंच, विधायक व मंत्री जैसे जनप्रतिनिधियों के प्रति आपत्तिजनक टिप्पणी करने के आरोप लगे हैं।

स्टेशन के टिकट काउंटर पर जेब से मोबाइल निकाला

बहादुरगढ़। रेलवे स्टेशन पर टिकट काउंटर की लाइन में खड़े एक व्यक्ति की जेब से किसी ने मोबाइल निकाल लिया। पीड़ित ने पुलिस को शिकायत दे दी है। शिकायत के आधार पर जीआरपी ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वारदात वत्स कॉलोनी के निवासी अशोक के साथ हुई है। अशोक का कहना है कि 19 फरवरी को वह रेलवे स्टेशन पर टिकट बुक कराने के लिए लाइन में खड़ा था। इसी दौरान किसी ने उसके लोअर की जेब से मोबाइल निकाल लिया। जब उसने जेब में हाथ डाला तो वारदात का पता चला। आसपास काफी लोगों से पूछताछ की लेकिन मोबाइल चोर का सुराग नहीं लगा।

अज्ञात वाहन ने बुजुर्ग को कुचला

झज्जर। गांव धांधलान में अज्ञात वाहन की चपेट में आने से बुजुर्ग व्यक्ति की मौत हो गई। बाद में ग्रामीणों द्वारा सूचना पुलिस व परिजनों को दी गई। पुलिस टीम मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम करवाने के लिए नागरिक अस्पताल भिजवाया। मृतक की पहचान गांव निवासी 65 वर्षीय महेंद्र पुत्र रामगोपाल के तौर पर की गई है। महेंद्र सिंह अपने साथी के साथ दुकान पर वेल्डिंग का कार्य करते थे और शनिवार को दोपहर के समय करीब दो बजे वह अपनी साइकिल पर सवार होकर घर जाने के लिए निकले थे। इसी दौरान बीच रास्ते अज्ञात वाहन ने साइकिल को टक्कर मार दी। जिसके चलते उनकी मौत हो गई। जांच अधिकारी सुमित कुमार ने बताया कि केस दर्ज किया गया है।

सुरक्षित निवेश के कई मजबूत विकल्प, मिलेगा बढ़िया रिटर्न

- पीपीएफ, एनएससी, एससीएसएस और सुकन्या जैसी योजनाएं दे रही हैं आकर्षक ब्याज और टैक्स लाभ
- कम जोखिम में स्थिर आय और लंबी अवधि में मजबूत फंड बनाने के विकल्प
- बैंक एफडी से आगे बढ़कर सोचें, सरकारी योजनाओं में छिपा है बेहतर रिटर्न

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में निवेशकों की सबसे बड़ी प्राथमिकता है पूंजी की सुरक्षा और स्थिर रिटर्न। शेयर बाजार की अस्थिरता से घबराने वाले या जोखिम कम लेना चाहने वाले लोग आमतौर पर बैंक एफडी का सहारा लेते हैं। लेकिन क्या एफडी ही एकमात्र सुरक्षित विकल्प है? असल में, सरकार समर्थित कई ऐसी योजनाएं हैं जो न केवल सुरक्षित हैं, बल्कि कई मामलों में एफडी से बेहतर ब्याज भी देती हैं। आइए जानते हैं ऐसे ही भरोसेमंद निवेश विकल्पों के बारे में, जहां सुरक्षा के साथ अच्छा रिटर्न भी मिल सकता है।

कंपाउंडिंग के लिए सबसे बेहतर

1. पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) अगर आपका लक्ष्य लंबी अवधि में सुरक्षित तरीके से बड़ा फंड बनाना है, तो पीपीएफ एक बेहतरीन विकल्प है।

- निवेश अवधि: 15 वर्ष
- वर्तमान ब्याज दर : 7.1% (सरकार द्वारा तिमाही आधार पर तय)
- अधिकतम निवेश : 1.5 लाख रुपये प्रति वर्ष
- टैक्स लाभ : धारा 80सी के तहत छूट
- पीपीएफ की सबसे बड़ी खासियत है इसका ईईई स्टेटस निवेश, ब्याज और मैच्योरिटी राशि तीनों टैक्स-फ्री होती हैं। यह योजना खासकर उन निवेशकों के लिए उपयुक्त है जो रिटायरमेंट या बच्चों की उच्च शिक्षा जैसे दीर्घकालिक लक्ष्य के लिए सुरक्षित निवेश करना चाहते हैं।

2. नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट (एनएससी)

- यदि आप 5 साल की अवधि के लिए सुरक्षित निवेश चाहते हैं, तो एनएससी एक अच्छा विकल्प हो सकता है।
- निवेश अवधि : 5 वर्ष
- ब्याज दर : लगभग 7.7%
- टैक्स लाभ : 80सी के तहत छूट
- एनएससी में निवेश की गई राशि सुरक्षित रहती है और तय ब्याज दर के अनुसार परिपक्वता पर रिटर्न मिलता है। यह योजना उन लोगों के लिए बेहतर है जो मध्यम अवधि के लक्ष्य के लिए निवेश करना चाहते हैं और जोखिम नहीं लेना चाहते।

3. सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम (एससीएसएस)

- यह योजना विशेष रूप से 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों के लिए है।
- निवेश अवधि : 5 वर्ष (आवश्यकतानुसार बढ़ाई जा सकती है)
- ब्याज दर : लगभग 8% से अधिक (तिमाही समीक्षा के अधीन)

नियमित ब्याज भुगतान

- एससीएसएस उन सेवानिवृत्त लोगों के लिए बेहद उपयोगी है जो अपने रिटायरमेंट फंड से नियमित आय चाहते हैं। ब्याज तिमाही आधार पर मिलता है, जिससे नकदी प्रवाह बना रहता है।

4. पोस्ट ऑफिस मंथली इनकम स्कीम (एमआईएस)

- अगर आप सुरक्षित निवेश के साथ हर महीने नियमित आय चाहते हैं, तो पोस्ट ऑफिस मंथली इनकम स्कीम एक बेहतर विकल्प है।
- निवेश अवधि: 5 वर्ष
- ब्याज दर: लगभग 7.4%
- मासिक ब्याज भुगतान

5. सुकन्या समृद्धि योजना (एसएसवाई)

- बेटियों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए यह योजना विशेष रूप से बनाई गई है।
- पात्रता: 10 वर्ष या उससे कम आयु की बेटी
- निवेश अवधि: 15 वर्ष
- मैच्योरिटी: 21 वर्ष
- अधिकतम निवेश: 1.5 लाख रुपये प्रति वर्ष
- ब्याज दर: लगभग 8.2%
- एसएसवाई वर्तमान में सबसे अधिक ब्याज देती है।

एसआईपी संपत्ति निर्माण का एक आसान और व्यवस्थित तरीका बिना योजनाबद्ध निकासी निवेश को कर देती है बर्बाद

सिर्फ एसआईपी नहीं एसडब्लूपी भी जरूरी

बिजनेस डेस्क

जनवरी 2026 में निवेशकों ने सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए म्यूचुअल फंड में 31,000 करोड़ रुपये का निवेश किया। एसआईपी अब आदत जैसी बन गई है। यह संपत्ति निर्माण का एक आसान और व्यवस्थित तरीका बन गया है। लेकिन असली परीक्षा तब शुरू होती है जब आप इसका उपयोग करना शुरू करते हैं। बिना योजनाबद्ध निकासी रणनीति के वर्षों का अनुशासित निवेश जल्दी ही बिखर सकता है। इसलिए हर एसआईपी के साथ एक सिस्टमैटिक विदड्रॉल प्लान (एसडब्लूपी) होना भी जरूरी है। एसआईपी संपत्ति संचय का एक प्रभावी साधन है, लेकिन यह सुचारु परिणाम की गारंटी नहीं देता। इसलिए एसआईपी से बाहर निकलने का समय बेहद महत्वपूर्ण होता है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि आपका एसआईपी कितने समय तक चला या आपने इसे किस बाजार परिस्थिति में शुरू किया। अंतिम चरण में बाजार में गिरावट आपकी योजनाओं को पटरी से उतार सकती है। मान लीजिए एक निवेशक ने जनवरी 2005 में एसबीआई निफ्टी इंडेक्स फंड में 10,000 रुपये की मासिक एसआईपी शुरू की। लक्ष्य था 2020 के मध्य तक घर की डाउन पेमेंट के लिए 40 लाख रुपये जुटाना। 31 जनवरी 2020 तक 18 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 40.73 लाख रुपये हो गया। लक्ष्य आसानी से हासिल होता दिख रहा था। फिर महामारी के कारण बाजार में गिरावट आई। 23 मार्च 2020 तक यह कॉर्पस घटकर 26 लाख रुपये रह गया यानी अचानक 14 लाख रुपये की कमी। पोर्टफोलियो को दोबारा संभलने में लगभग आठ महीने लग गए। यदि निवेशक ने लक्ष्य तिथि से 12-18 महीने पहले एसडब्लूपी के माध्यम से चरणबद्ध निकासी शुरू कर दी होती तो कुछ मुनाफा सुरक्षित किया जा सकता था। एसडब्लूपी मूलतः एसआईपी का उल्टा है। नियमित अंतराल पर निश्चित रकम निवेश करने के बजाय आप तय समयावधि में नियमित रूप से निश्चित राशि निकालते हैं। जैसे-जैसे लक्ष्य नजदीक आता है, एसडब्लूपी एक संतुलित और क्रमिक निकासी का मार्ग तैयार करता है।

बकेट रणनीति भी बनाएं

रिटायरमेंट में हर फंड एसडब्लूपी के लिए उपयुक्त नहीं होता। विशेषज्ञ तीन-बकेट रणनीति सुझाते हैं। तीन साल के खर्च लिक्विड फंड में, चौथे से सातवें वर्ष के खर्च कंजरवेटिव हाइब्रिड फंड में और दीर्घकालिक निवेश इक्विटी में ताकि मुद्रास्फीति को मात दी जा सके। निकासी पहले बकेट से शुरू होती है। जैसे-जैसे वह कम होता है, दूसरे बकेट से उसे भरा जाता है और बाद में तीसरे बकेट से। यह स्तरीय संरचना निकट अवधि के खर्चों को इक्विटी की अस्थिरता से बचाती है और दीर्घकालिक वृद्धि को बनाए रखती है।

चक्र को पूरा करना जरूरी

हर वित्तीय यात्रा व्यक्तिगत लक्ष्यों, आय पैटर्न और जोखिम सहनशीलता से प्रभावित होती है। लेकिन सिद्धांत सार्वभौमिक है। वितरण योजना के बिना संचय अधूरा है। एसआईपी से एसडब्लूपी तक सुचारु संक्रमण आवश्यक है। सही तरीके से किया जाए तो यह साझेदारी चक्रवृद्धि की शक्ति को जारी रखते हुए आपको नियमित आय भी देती रहती है।

एसडब्लूपी है वितरण की संरचना

इस संरचना के दो प्रमुख लाभ हैं। पहला यह अंतिम समय की बाजार अस्थिरता से अर्जित लाभ के एक हिस्से की सुरक्षा करता है। दूसरा जो राशि नहीं निकाली जाती, वह निवेशित बनी रहती है और अंतिम चरण में संभावित बढ़त का लाभ उठाती है। उद्योग के विशेषज्ञ अब एसआईपी और एसडब्लूपी को एक संयुक्त रणनीति के दो हिस्सों के रूप में देखते हैं। वे इस संयोजन को जीवन भर का एसआईपी बताते हैं। कमाई के वर्षों में व्यवस्थित बचत और आय कम होने पर व्यवस्थित निकासी, बिना चक्रवृद्धि की ताकत को तोड़े। असल में एसआईपी संचय का इंजन है, जबकि एसडब्लूपी वितरण की संरचना। यह दोनों मिलकर संपत्ति निर्माण, संरक्षण और वितरण का निरंतर चक्र बनाते हैं।

सेवानिवृत्ति से आगे की भी सोचें

परंपरागत रूप से एसडब्लूपी को रिटायरमेंट आय के साधन के रूप में देखा जाता रहा है, लेकिन यह धारणा बदल रही है। एसडब्लूपी जीवन के विभिन्न चरणों में एक लचीला और कर-कुशल नकदी प्रवाह समाधान बनकर उभर रहा है। यह लोन की ईएमआई, बच्चों की फीस या अनियमित आय से जुड़े जीवनशैली खर्च जैसे नियमित खर्चों में मदद कर सकता है। एसडब्लूपी फ्रीलांसर, कंसल्टेंट या चक्रीय आय वाले व्यवसायियों के लिए भी उपयोगी है। अधिक आय वाले महीनों में अतिरिक्त कमाई निवेश की जा सकती है, जबकि एक छोटा एसडब्लूपी निश्चित मासिक खर्चों के लिए स्थिर आय प्रदान कर सकता है। यहां तक कि एकमुश्त लक्ष्यों जैसे शादी या घर की मरम्मत के लिए भी एसडब्लूपी चरणबद्ध निकासी की सुविधा देता है, जिससे टाइमिंग जोखिम कम होता है और शेष पूंजी निवेशित बनी रहती है।

संक्रमण की योजना भी हो

विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि निवेश के तुरंत बाद एसडब्लूपी शुरू नहीं करना चाहिए। निकासी शुरू होने से पहले पोर्टफोलियो को बढ़ने का समय चाहिए। बहुत जल्दी शुरुआत करने से यदि बाजार अस्थिर हो जाए, तो मूलधन पर असर पड़ सकता है। कर दक्षता भी इसका एक बड़ा लाभ है। प्रत्येक एसडब्लूपी किस्त में मूलधन और पूंजीगत लाभ दोनों शामिल होते हैं, लेकिन कर केवल लाभ वाले हिस्से पर लगता है। कम से कम एक वर्ष तक निकासी टालने से इक्विटी निवेश दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ कर के दायरे में आ जाता है, जिसमें सालाना 1.25 लाख रुपये तक के लाभ पर छूट मिलती है। अनिवार्य लक्ष्यों के लिए आदर्श रूप से लक्ष्य तिथि से 2-3 वर्ष पहले एसडब्लूपी शुरू कर देना चाहिए। भले ही कॉर्पस थोड़ा कम हो। अंतिम वर्ष तक इंतजार करने से जोखिम बढ़ जाता है। चरणबद्ध निकासी परिणामों को संतुलित बनाती है।

कितनी निकासी सुरक्षित है?

दीर्घकालिक स्थितियों जैसे सेवानिवृत्ति में निकासी दर यह तय करती है कि बचत 20-30 वर्षों तक चलेगी या समय से पहले खत्म हो जाएगी। जोखिम केवल बाजार की अस्थिरता नहीं, बल्कि सीक्वेंस-ऑफ-रिटर्न्स का भी होता है। यदि शुरुआती वर्षों में खराब रिटर्न के दौरान निकासी होती है तो कॉर्पस तेजी से घट सकता है। एसआईपी के विपरीत, जहां गिरते बाजार में अधिक यूनिट जमा होती हैं, एसडब्लूपी में गिरावट के दौरान समान नकदी प्रवाह के लिए अधिक यूनिट बेचनी पड़ती हैं। इसलिए निकासी दर संतुलित और सावधानीपूर्ण होनी चाहिए। आदर्श रूप से निकासी दर पोर्टफोलियो के दीर्घकालिक संभावित रिटर्न से कम होनी चाहिए। एक सामान्य नियम यह है कि निकासी वास्तविक रिटर्न यानी मुद्रास्फीति समायोजित रिटर्न के आधार पर तय हो। यदि अपेक्षित रिटर्न 10% और मुद्रास्फीति 5% है, तो निकासी 5% से अधिक नहीं होनी चाहिए। स्थिरता बनाए रखने के लिए निकासी दर अपेक्षित रिटर्न से 2-3 प्रतिशत अंक कम रखनी चाहिए। वैश्विक शोध अक्सर 3.5-4% को एक टिकाऊ दर मानता है, लेकिन इसकी उपयुक्तता एसेट आवंटन, जीवन प्रत्याशा और जीवनशैली की जरूरतों पर निर्भर करती है। प्रदर्शन के आधार पर समायोजित होने वाली डायनेमिक निकासी रणनीतियां भी मजबूती बढ़ा सकती हैं।

क्या एसआईपी सच में बना सकती है अमीर?

नौकरीपेशा लोगों के लिए छोटी बचत को निवेश में बदलना व्यावहारिक तरीका

अनुशासन लंबे समय में संपत्ति निर्माण की रखता है नींव

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में हर कमाने वाला व्यक्ति चाहता है कि उसकी आय सिर्फ खर्च तक सीमित न रहे, बल्कि भविष्य में बड़ी पूंजी में बदले। नौकरीपेशा लोगों के लिए हर महीने छोटी-छोटी बचत को निवेश में बदलना सबसे व्यावहारिक तरीका है। इसी संदर्भ में एसआईपी सबसे ज्यादा चर्चा में रहता है। लेकिन सवाल यह है क्या एसआईपी वास्तव में आपको अमीर बना सकती है? सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि एसआईपी कोई निवेश उत्पाद (प्रोडक्ट) नहीं, बल्कि निवेश करने का तरीका है। असल निवेश म्यूचुअल फंड में होता है और एसआईपी उस फंड में नियमित अंतराल पर तय रकम लगाने की प्रणाली है। यानी आप हर महीने एक निश्चित राशि निवेश करते हैं, चाहे बाजार ऊपर हो या नीचे। यही अनुशासन लंबे समय में संपत्ति निर्माण की नींव रखता है। अमीर बनने की संभावना इस बात पर निर्भर करती है कि आप कितने समय तक निवेश करते हैं और कितनी निरंतरता बनाए रखते हैं। शेयर बाजार से जुड़े फंड्स में ऐतिहासिक रूप से लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न देखने को मिले हैं, लेकिन अल्पकाल में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है। जो निवेशक 8–10 साल या उससे अधिक का धैर्य रखते हैं, उन्हें चक्रवृद्धि का वास्तविक लाभ मिलता है। छोटी रकम भी समय के साथ बड़ी पूंजी में बदल सकती है। बशर्ते निवेश नियमित और दीर्घकालिक हो।

जल्दी अमीर बनने का शॉर्टकट नहीं

हालांकि, यह समझना भी जरूरी है कि एसआईपी "जल्दी अमीर बनने" का शॉर्टकट नहीं है। बाजार में गिरावट आएगी, रिटर्न कभी ज्यादा तो कभी कम होंगे। जो लोग कुछ महीनों में चमत्कार की उम्मीद करते हैं, वे अक्सर निराश होते हैं। असली ताकत अनुशासन और समय में छिपी है, न कि तात्कालिक मुनाफे में। जोखिम, रणनीति और समझदारी का संतुलन एसआईपी बाजार से जुड़ा निवेश है, इसलिए इसमें जोखिम भी शामिल है। यह फिक्स्ड डिपॉजिट या पीपीएफ की तरह पूरी तरह सुरक्षित विकल्प नहीं है। सही फंड का चयन, अपने जोखिम स्तर की पहचान और निवेश लक्ष्य की स्पष्टता बेहद जरूरी है। यदि आपका लक्ष्य 10-15 साल दूर है जैसे रिटायरमेंट या बच्चों की पढ़ाई तो इक्विटी आधारित फंड उपयुक्त हो सकते हैं, लेकिन कम अवधि के लक्ष्य के लिए संतुलित या डेट फंड बेहतर विकल्प हो सकते हैं।

बाजार गिरने पर घबराएं नहीं

बाजार गिरने पर घबराहट में एसआईपी रोक देना सबसे बड़ी गलती मानी जाती है। दरअसल, गिरावट के समय कम कीमत पर अधिक यूनिट मिलती हैं, जो बाजार सुधरने पर बेहतर रिटर्न दे सकती हैं। यही "रूपीकॉस्ट एवरेजिंग" का फायदा है। इसलिए समझदारी यही है कि उतार-चढ़ाव को निवेश यात्रा का हिस्सा मानें। एक और आम गलती है बहुत सारे फंड में निवेश कर देना। अलग-अलग सलाह के चक्कर में पोर्टफोलियो इतना जटिल हो जाता है कि निगरानी मुश्किल हो जाती है। बेहतर है कि अपने लक्ष्य के अनुसार सीमित और संतुलित फंड चुनें। गुणवत्ता पर ध्यान दें, संख्या पर नहीं। एसआईपी की एक बड़ी खूबी लचीलापन भी है। आपकी आय बढ़े तो निवेश राशि बढ़ा सकते हैं, जरूरत पड़े तो घटा या रोक भी सकते हैं। यह कोई कठोर अनुबंध नहीं है। लेकिन बार-बार बदलाव से बचना चाहिए; रणनीति सोच-समझकर तय करें।

यह जानना जरूरी

एसआईपी आपको रातोंरात अमीर नहीं बनाएगी, लेकिन समय, अनुशासन और सही रणनीति के साथ यह मजबूत संपत्ति निर्माण का प्रभावी साधन बन सकती है। समझदारी से किया गया निवेश, धैर्य और लक्ष्य-आधारित योजना यही वह सूत्र है जो सामान्य आय वाले व्यक्ति को भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना सकता है। अमीरी केवल बड़ी कमाई से नहीं, बल्कि सही निवेश आदतों से भी आती है।

फंड तैयार करने की जल्दबाजी छोड़िए, एसआईपी को समय दें

बिजनेस डेस्क। सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) आज म्यूचुअल फंड में निवेश का सबसे लोकप्रिय तरीका बन चुका है। छोटे-छोटे मासिक निवेश के जरिए बड़ा फंड तैयार करने का यह अनुशासित माध्यम है। लेकिन एक सवाल लगभग हर निवेशक के मन में आता है। एसआईपी में रिटर्न असली रफ्तार कब पकड़ता है? कई निवेशक 1-2 साल में शानदार मुनाफे की उम्मीद करते हैं। अगर ऐसा नहीं होता, तो वे एसआईपी बंद भी कर देते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि एसआईपी का असली फायदा समय के साथ खुलकर सामने आता है।

शॉर्ट टर्म में क्यों निराश कर सकता है एसआईपी?

अगर आप 1 से 3 साल की अवधि में एसआईपी का प्रदर्शन देखें, तो तस्वीर उतनी आकर्षक नहीं दिखती। ऐतिहासिक आंकड़ों के आधार पर निफ्टी 50 पर आधारित एसआईपी के रिटर्न का विश्लेषण बताता है कि छोटे समय में रिटर्न कई बार फ्लैट या निगेटिव भी रहा है।

कुछ अवधियों में

1. साल का एक्सआईआरआर रिटर्न -60% से ज्यादा तक गिरा
2. साल में -40% के आसपास
3. साल में -20% से ज्यादा गिरावट

शुरुआती रिटर्न कमजोर

यह सुनकर घबराहट होना स्वाभाविक है। लेकिन इसका कारण समझना जरूरी है। शेयर बाजार साइकिल में चलता है कभी तेजी, कभी गिरावट। यदि आपने एसआईपी की शुरुआत बाजार के ऊपरी स्तर पर की और उसके बाद गिरावट आई, तो शुरुआती रिटर्न कमजोर दिख सकते हैं। इसे ही टाइमिंग रिस्क कहते हैं। शॉर्ट टर्म में बाजार की दिशा आपके निवेश अनुभव को प्रभावित करती है।

5 साल के बाद बदलती है तस्वीर

- जैसे-जैसे निवेश की अवधि 5 साल के आसपास पहुंचती है, उतार-चढ़ाव का असर कम होने लगता है।
- 5 साल के अधिकांश रोलिंग पीरियड में एसआईपी का रिटर्न 5% से 10% के बीच रहा है। लंबी अवधि में रिकवरी का मौका मिलता है।

दो चीजें काम करती हैं

- रुपया लागत औसत : बाजार गिरने पर आपकी तय राशि से ज्यादा यूनिट्स मिलती हैं।
- कंपाउंडिंग : शुरुआती निवेश पर मिलने वाला रिटर्न आगे रिटर्न कमाता है।
- शुरुआती सालों की कमजोरी संतुलित होने लगती है और निवेश स्थिरता दिखाने लगता है।

7 साल के बाद बढ़ती है रफ्तार

- इतिहास बताता है कि 7 साल या उससे अधिक की अवधि में एसआईपी पर निगेटिव रिटर्न की संभावना लगभग खत्म हो जाती है। डबल डिजिट रिटर्न सामान्य हो जाते हैं। यहां सबसे बड़ा बदलाव बाजार में नहीं, बल्कि निवेशक के अनुभव में आता है। बाजार गिरता है, तो आपके पास रिकवरी का पर्याप्त समय होता है। तेजी आने पर आप उस पूरी रैली का हिस्सा बनते हैं। कंपाउंडिंग का प्रभाव स्पष्ट दिखने लगता है।

ऐसे समझें

उदाहरण के तौर पर, अगर कोई निवेशक हर महीने 10,000 रुपये एसआईपी करता है और औसतन 12% रिटर्न मिलता है, तो 3 साल में कुल निवेश 3.6 लाख पर फंड लगभग 4–4.5 लाख के आसपास हो सकता है। 10 साल में कुल निवेश 12 लाख पर फंड 23–24 लाख से ज्यादा हो सकता है। यही है कंपाउंडिंग की असली ताकत।

कब शुरू करें और कितना समय दें

- जितनी जल्दी शुरू करेंगे, उतना बेहतर।
- कम से कम 7–10 साल का नजरिया रखें।
- बाजार गिरने पर बंद न करें, जारी रखें।
- लक्ष्य आधारित निवेश करें।

असली रफ्तार कहां से

- पहले 2–3 साल: उतार-चढ़ाव
- 5 साल: स्थिरता
- 7 साल+: कंपाउंडिंग का प्रभाव
- 10 साल+: वास्तविक वेल्थ क्रिएशन

धैर्य ही असली रणनीति

एसआईपी कोई जादुई फार्मूला नहीं, बल्कि अनुशासित निवेश की प्रक्रिया है। छोटे समय में परिणाम आकर्षक न दिखें, लेकिन लंबी अवधि में यह प्रभावशाली बन जाता है। अगर आप बाजार के उतार-चढ़ाव को सहन करने का धैर्य रखते हैं और निवेश को 7–10 साल का समय देते हैं, तो एसआईपी मजबूत संपत्ति निर्माण करेगी।

ऑनलाइन शॉपिंग के दौर में यह सबसे लुभावना मौका

सस्ती किस्तों का जाल : क्या सच में 'नो कॉस्ट' है ईएमआई

ईएमआई में नहीं दिखता ब्याज, लेकिन कीमत बदल जाती है

जानकारी

बिजनेस डेस्क

ऑनलाइन शॉपिंग के दौर में एक लाइन सबसे ज्यादा लुभाती है वो है 'नो कॉस्ट' ईएमआई। छोटी-छोटी किस्तें देखकर खरीदारी का फैसला आसान लगने लगता है। दिमाग कहता है "इतनी सी ईएमआई है, अभी ले लेते हैं।" लेकिन निवेश और व्यक्तिगत वित्त के नजरिए से देखें तो 'नो कॉस्ट' ईएमआई उतनी सरल नहीं, जितनी दिखाई देती है। अब सवाल यह है कि क्या वाकई इसमें कोई लागत नहीं होती? या फिर लागत सिर्फ नजर नहीं आती?

'नो कॉस्ट' ईएमआई होती क्या है?

सरल शब्दों में, 'नो कॉस्ट' ईएमआई का मतलब है कि आप किसी प्रोडक्ट की कीमत किस्तों में चुकाते हैं और आपको अलग से ब्याज नहीं देना पड़ता। यानी कुल ईएमआई जोड़ने पर रकम उतनी ही होगी जितनी प्रोडक्ट की कीमत। लेकिन बैंक या फाइनेंस कंपनी बिना कमाई के पैसा उधार नहीं देती। तो फिर ब्याज कौन दे रहा है? यहीं से असली खेल शुरू होता है।

बैंक की कमाई कैसे होती है?

जब आप ईएमआई चुनते हैं, तो आमतौर पर प्रोडक्ट पर मिलने वाला सीधा डिस्काउंट कम कर दिया जाता है। उसी घटे हुए डिस्काउंट से बैंक का ब्याज एडजस्ट कर दिया जाता है। मतलब ये कि कागजों में आपको "ब्याज नहीं" दिखता है। लेकिन आपको मिलने वाला फायदा पहले ही कम कर दिया जाता है। बैंक को उसका हिस्सा मिल जाता है, और ग्राहक को लगता है कि वह बिना अतिरिक्त खर्च के सुविधा ले रहा है।

एक उदाहरण से समझिए

- मान लीजिए आप 60,000 रुपये का स्मार्टफोन खरीदना चाहते हैं।
- फुल पेमेंट पर ऑफर: 5,000 रुपये का सीधा डिस्काउंट
- अंतिम कीमत: 55,000 रुपये
- अब आप नो कॉस्ट ईएमआई चुनते हैं डिस्काउंट घटकर 2,500 रुपये रह जाता है
- नई कीमत: 57,500 रुपये
- आपने शुरुआत में ही 2,500 रुपये ज्यादा दे दिए।
- अगर इसमें 499 प्रोसेसिंग फीस और उस पर 18% जीएसटी जोड़ दें, तो कुल खर्च लगभग 58,000 रुपये से ऊपर पहुंच सकता है।
- दिखने में ईएमआई आसान थी, लेकिन कुल भुगतान बढ़ चुका है।

सबसे बड़ा भ्रम है: ईएमआई

- सुविधा=सस्ता सौदा
- असल में ईएमआई सिर्फ भुगतान को छोटे हिस्सों में बांटती है। खर्च कम नहीं करती।
- छोटी ईएमआई दिमाग पर दबाव कम डालती है। एकमुश्त 55,000 देने से ज्यादा आसान लगता है 4,800 रुपये की मासिक किस्त देना। लेकिन कुल रकम का हिसाब अक्सर नजरअंदाज हो जाता है।
- यह मनोवैज्ञानिक प्रभाव है—छोटे नंबर कम डराते हैं।
- छिपे हुए चार्ज जिन पर कम ध्यान जाता है

ये अतिरिक्त खर्च संभव

- प्रोसेसिंग फीस : 199 से 999 रुपये या उससे अधिक
- जीएसटी : प्रोसेसिंग फीस या ब्याज वाले हिस्से पर 18%
- ईएमआई कन्वर्जन चार्ज

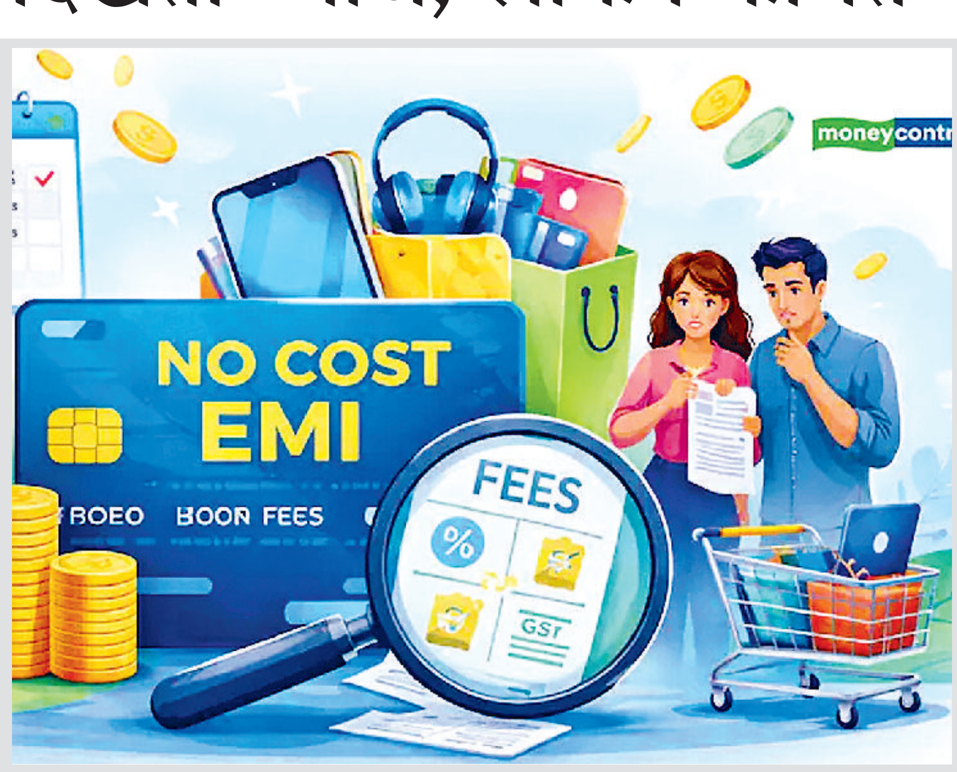

- लेट पेमेंट पेनल्टी (यदि किस्त समय पर न भरी जाए)
- ये सभी बातें अक्सर शर्तों में छिपी होती हैं, प्रोडक्ट पेज पर बड़े अक्षरों में नहीं लिखी होतीं।
- तुलना: फुल पेमेंट बनाम नो कॉस्ट ईएमआई

भुगतान तरीका	दिखने वाली कीमत	संभावित असली खर्च
फुल पेमेंट	55,000	55,000
नो कॉस्ट ईएमआई	57,500	58,000+

यह अंतर छोटा लग सकता है, लेकिन महंगे इलेक्ट्रॉनिक्स, फर्नीचर या एसी जैसे उत्पादों में यह हजारों रुपये तक पहुंच सकता है।

कब नो कॉस्ट ईएमआई सही विकल्प

- हर बार नो कॉस्ट ईएमआई गलत नहीं होती। कुछ परिस्थितियों में यह उपयोगी हो सकती है। आपके पास पूरी रकम उपलब्ध नहीं है। ईएमआई लेने से डिस्काउंट कम नहीं हो रहा। प्रोसेसिंग फीस शून्य है। आप कैश फ्लो मैनेजमेंट के लिए भुगतान फैलाना चाहते हैं। अगर इन शर्तों में से अधिकतर पूरी होती हैं, तो ईएमआई एक व्यावहारिक विकल्प हो सकता है।

निवेश के नजरिए से

व्यक्तिगत वित्त का एक मूल सिद्धांत है खर्च से पहले गणित करें। यदि आपके पास पर्याप्त बचत है और आप फुल पेमेंट कर सकते हैं, तो अक्सर वह सस्ता विकल्प होता है। ईएमआई चुनने से पहले यह सोचें।

सोचें क्या यह जरूरत है

- क्या ईएमआई के कारण मैं अतिरिक्त खर्च कर रहा हूं?
- क्या मैं कई ईएमआई का बोझ एक साथ उठा रहा हूं?
- कई बार लोग एक साथ 3-4 ईएमआई ले लेते हैं। छोटी-छोटी किस्तें मिलकर बड़ी मासिक देनदारी बन जाती हैं।

मार्केटिंग बनाम समझदारी

आज का ई-कॉमर्स माहौल भावनात्मक फैसले लेने को प्रेरित करता है। अभी खरीदें, बाद में भुगतान करें। लेकिन समझदार खरीदार पहले कैलकुलेशन करता है, फिर निर्णय लेता है। नो कॉस्ट ईएमआई धोखा नहीं है, लेकिन अधूरी जानकारी नुकसान में बदल सकती है। नो कॉस्ट ईएमआई सुविधा देती है, लेकिन हर सुविधा की एक कीमत होती है चाहे वह सीधी दिखे या छिपी हुई हो। इसलिए पहले पूरा गणित समझें, कुल भुगतान जोड़ें, और फिर फैसला लें। क्योंकि समझदारी से किया गया खर्च ही असली बचत है।

खबर संक्षेप

मकान में घुसकर दो युवकों पर डंडों से हमला

बहादुरगढ़। गांव छारा स्थित एक मकान में घुसकर युवकों पर डंडों से हमला किए जाने का मामला सामने आया है। हमले में दोनों युवकों को काफी चोट आई। उन्हें पीजीआई रोहतक रेफर किया गया है। गांव के ही एक युवक व उसके दो अन्य दोस्तों पर मारपीट करने और धमकी देने का आरोप है। हमले की वजह और आरोपों की सत्यता जांच का विषय है। मांडोठी चौकी पुलिस ने केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। वारदात छारा के निवासी राहुल व उसके दोस्त सचिन के साथ हुई है। राहुल का कहना है कि कुछ दिन पहले हमारी एक व्यक्ति के साथ शराब के कारण कहासुनी हो गई थी। तब उस दौरान राजनीमा हो गया लेकिन उस आदमी के लड़के ने बदला लेने की धमकी दी थी। शुक्रवार को मैं व सचिन अपने घर पर ताश खेल रहे थे। इसी दौरान वह लड़का अपने दो दोस्तों के साथ हमारे घर में घुस आया। आते ही तीनों ने लात, घूसों और डंडों से हमला कर दिया। हमले में हमारे सिर सहित अन्य हिस्सों में चोट आई। शोर सुनकर लोग इकट्ठे होने लगे तो तीनों जान से मारने की धमकी देकर भाग गए। हमें बहादुरगढ़ के नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां से पीजीआई रोहतक रेफर कर दिए गए। उधर, मांडोठी चौकी पुलिस का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है।

खातीवास गांव में फ्री हेल्थ चेकअप कैंप आज

झज्जर। संस्कारम हॉस्पिटल एंड ट्रॉमा सेंटर पाटौदा द्वारा रविवार को खातीवास गांव में मेगा फ्री हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया जाएगा। गांव के दादा सिराज वाला मंदिर में स्वर्गीय दादा लालचंद की स्मृति में आयोजित इस कैंप में विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम द्वारा सामान्य स्वास्थ्य जांच, परामर्श तथा आवश्यक चिकित्सकीय मार्गदर्शन निःशुल्क प्रदान किया जाएगा। संस्कारम ग्रुप के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने बताया कि कैंप में आंखों की जांच एवं चश्मा परामर्श, रक्त परीक्षण, दंत जांच, कानों की जांच, हड्डी परीक्षण, थायराइड एवं मूत्र जांच, चर्म रोग परामर्श, बीपी व शुगर जांच, एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड, सी-टी स्कैन परामर्श, आवश्यक दवाइयां तथा निःशुल्क पंचकर्म थैरेपी की सुविधा उपलब्ध रहेगी। गर्भवती महिलाओं के लिए विशेष चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाएगी तथा जरूरतमंद मरीजों के लिए नॉर्मल एवं सिजेरियन डिलीवरी की निःशुल्क व्यवस्था भी उपलब्ध रहेगी।

जाखोदा में मासूम मयंक की मौत से सबक लेने की जरूरत

खुले मेनहोल और नाले ले रहे मासूमों की जान, जिम्मेदारों का नहीं ध्यान

सीवरों के ढक्कन क्षतिग्रस्त होकर भी महीनों तक टूटे रहते हैं, जिस कारण होते हैं हादसे

बहादुरगढ़। जाखोदा में स्थित इस खुले नाले में गिरने से गई थी मयंक की जान।

बहादुरगढ़। नागरिक अस्पताल के गेट पर खुला नाला। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

शहर और आसपास के क्षेत्रों में खुले नाले तथा सीवर के मेनहोल जानलेवा साबित हो रहे हैं। हाल ही में जाखोदा गांव में मासूम मयंक की दर्दनाक मौत ने एक बार फिर लापरवाही को उजागर कर दिया है।

हालांकि बहादुरगढ़ में यह कोई पहला मामला नहीं है। इससे पहले भी खुले सीवर और नालों के कारण कई लोगों की जान जा चुकी है। नवंबर-2023 में लाइनपार स्थित बिहारी कॉलोनी में खुले सीवर में गिरने से 8 वर्षीय मनीष की मौत हो गई थी। जबकि अप्रैल-2024 में देवीलाल पार्क के साथ सटे खुले नाले में गिरकर अर्जुन नाम के युवक की जान चली गई थी। वहीं कुछ महीने पहले नजफगढ़ रोड बाइपास के निकट खुले नाले में गिरने से बुजुर्ग दंपति घायल हो गए थे। इसके अलावा और अन्य हादसे भी हो चुके हैं। दरअसल, सीवर की सफाई के बाद कर्मचारी मेनहोल को खुला छोड़ देते हैं। सीवरों के ढक्कन क्षतिग्रस्त होकर भी महीनों तक टूटे रहते हैं, जिस कारण हादसे होते हैं। इसके अलावा कई जगह नाले खुले हुए हैं। ये खुले नाले इंसानों तथा अन्य जीवों के लिए नुकसानदेह साबित हो रहे हैं।

समय-समय पर लोगों द्वारा नालों को ढकवाने की मांग भी उठाई जाती है लेकिन इस तरफ गंभीरता नहीं बरती जाती। शिक्षक मनीष चाहार ने बताया कि नालों पर स्लैब ढकना या आसपास सुरक्षा दीवार व जाली लगाना जरूरी है। इन नियमों का पालन न करना सीधे तौर पर नागरिकों की सुरक्षा से खिलवाड़ है। प्रशासन को नियमित निरीक्षण और सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। वहीं आम नागरिकों को भी सतर्क रहना होगा। यदि आसपास कहीं सीवर या नाला खुला है तो बच्चों का ध्यान रखना चाहिए।

जिम्मेदारी और कार्रवाई की जरूरत

सचिन ने कहा कि खुले नाले और मेनहोल केवल लापरवाही का परिणाम नहीं बल्कि एक गंभीर समस्या है। यह समस्या बहादुरगढ़ में जगह-जगह देखने को मिल सकती है। जब तक प्रशासन ठोस और सख्त कदम नहीं उठाएगा, तब तक ऐसे हादसे होते रहेंगे। मासूम मयंक की मौत एक चेतावनी है कि अब लापरवाही नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और कार्रवाई की जरूरत है।

न्यूज डायरी

छात्राओं को दी सेल्फ डिफेंस की ट्रेनिंग

झज्जर। महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय में शनिवार को सेल्फ डिफेंस ट्रेनिंग का आयोजन किया गया। शारीरिक शिक्षा विभाग से डॉक्टर तितिक्षा रोहिल्ला ने बताया कि प्राचार्या डॉक्टर नीलम गर्ग अध्यक्षता में आयोजित इस ट्रेनिंग में डॉक्टर सुदेश कुमार ने शिक्षकों व छात्राओं को आत्मरक्षा के महत्वपूर्ण कौशल सिखाए। उन्होंने छात्राओं को प्रभावी तरीके से आत्मरक्षा के लिए किक मारना, पंच मारना तथा बस में छेड़खानी के दौरान की जाने वाली आत्मरक्षा के गुर सिखाए। उन्होंने बताया कि आत्मरक्षा हर महिला का अधिकार है। प्राचार्या डॉक्टर नीलम गर्ग ने बताया कि महाविद्यालय ने भविष्य में भी ऐसे सत्र आयोजित करने की योजना बनाई है ताकि सभी छात्राएं सुरक्षित और सशक्त बन सकें। ट्रेनिंग के समापन पर डॉक्टर चित्रलेखा बंसल, डॉक्टर नीतू जैन व डॉक्टर सुदेश कुमार को पौधा देकर सम्मानित किया।

एनएसएस स्वयंसेवकों ने निकाली जागरूकता रैली

झज्जर। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ की एनएसएस इकाई एक व दो द्वारा सात दिवसीय कैंप की शुरूआत की गई है। प्रशासनिक अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिंह ने बताया कि प्राचार्य डॉ. सतवीर सिंह की अध्यक्षता में दूसरे दिन की शुरूआत स्वयंसेवकों को कराए गए योगाभ्यास से हुई। पवन कुमार द्वारा स्वयंसेवकों को योगिक क्रियाएं करवाई गई। इसके उपरांत गांव में जागरूकता रैली निकालकर स्वयंसेवकों द्वारा ग्रामीणों को प्लास्टिक मुक्त वातावरण व साफ-सफाई के लिए प्रेरित किया। प्रदीप कुमार ने पर्यावरण जागरुकता पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. शिवानी ने स्वयंसेवकों की सराहना करते हुए कहा कि एनएसएस का उद्देश्य केवल सेवा ही नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास भी है। इस मौके पर राजेश कुमार, ओमबीर, मंजू कुमारी, डॉ. सीटू, प्रियंका, नितिन सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

पशुपालकों को दी स्वच्छ दूध उत्पादन की जानकारी

झज्जर। पशुपालन व डेयरी विभाग द्वारा क्षेत्र के गांव ग्वालिसन में पशुपालक सभा व जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया। कैंप में ग्वालिसन व कड़ौधा गांव के 60 से अधिक पशुपालकों ने भाग लेकर विभाग द्वारा प्रदान की जा रही योजनाओं बारे जानकारी हासिल की। पशुपालक सभा में जहां डॉ. दिनेश गुलिया ने पशुओं में टीकाकरण से बीमारियों की रोकथाम बारे जागरूक किया वहीं डॉ. अरविंद कुमार ने पशुओं में स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए ध्यान देने योग्य बातें बताई व डॉ. पुष्पेंद्र जाखड़ ने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान के महत्व को समझाया। इनके अलावा डॉ. प्रिंस तोमर ने पशुओं में पेट के कीड़े को खत्म करने के लिए समय-समय पर पशुओं को कृमि निवारण दवाई देते रहने की सलाह दी। पशुपालन विभाग के उपनिदेशक डॉ. मनीष डबास ने पशुपालकों को उन्नत नस्ल के पशु पालकर प्रदेश के दूध उत्पादन को बढ़ाने, पशुओं के रहन-सहन में स्वच्छ पानी और खुली हवादार जगह के महत्व की जानकारी दी। इस दौरान उन्होंने हाल ही में कुरुक्षेत्र में आयोजित 41वें राज्य स्तरीय पशुधन मेले में हरियाणा गाय में ब्रीड चैंपियन रही गाय के मालिक ग्वालिसन गांव निवासी चरण सिंह व उन्नत नस्ल के पशु रखने पर मामन कड़ौधा, ब्रह्म प्रकाश व संजय को सम्मानित किया। इस मौके पर ग्वालिसन सरपंच राकेश, पशुपालन विभाग से डॉ. जयकिशन, डॉ. हरिओम व डॉ. अनुराग सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

स्कूल बस में तोड़फोड़ कर बैट्री चुराई

बहादुरगढ़। इलाके की सड़कों पर वाहन सुरक्षित नहीं है। मौका लगते ही चोर वाहनों और उनके पार्ट्स पर हाथ साफ कर देते हैं। अब गांव बाढ़सा में एक स्कूल बस में तोड़फोड़ कर बैट्री चुरा ली गई। स्विफ्ट डिजायर कार में सवार होकर आए चोरों ने वारदात को अंजाम दिया। इस संबंध में पुलिस को शिकायत दे दी गई है। बादली के निवासी राहुल गुलिया का कहना है कि वह ऋषिकुल स्कूल में अकाउंटेंट है। उनके स्कूल की बाढ़सा में खड़ी एक बस को चोरों ने निशाना बनाया। बस में तोड़फोड़ की और बैट्री निकाल ली। जब जांच की तो पता चला कि चोर डिजायर गाड़ी में आए थे। इस शिकायत पर बादली थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वहीं, दूसरी तरफ रोहद में स्टेशन के पास खड़ी मोटरसाइकिल चोरी कर ली गई। रोहद के निवासी जतिन ने 14 फरवरी को अपनी बाइक वहां खड़ी की और पंजाब चला गया था। अब वापस आया तो वारदात का पता चला। जीआरपी मामले में जांच कर रही है।

नगर परिषद ने कागजों में ही लगाईं स्ट्रीट लाइटें, लाखों का घोटाला किया

बहादुरगढ़। इनेलो पार्षद मोहित राठी ने नगर परिषद पर स्ट्रीट लाइटों में धांधली करने का आरोप लगाया है। उनके अनुसार नगर परिषद ने वार्ड में लाइटें नहीं लगवाईं, जबकि एक सूची तैयार कर ली, जिसमें फर्जी मोबाइल नंबर दर्ज कर लाइटें हड़पने का खेल रचा गया है। पार्षद मोहित राठी ने आरोप लगाया कि 1 दिसंबर 2025 को उन्हें नगर परिषद की ओर से एक पत्र मिला था। जिसमें उनके वार्ड के अंधेरे वाले स्थानों की सूची मांगी गई। इसमें स्पष्ट लिखा गया था कि केवल एक वार्ड के लिए 60 लाइटें ही लगाई जाएंगी। इसके बाद उन्होंने अपने वार्ड के अंधेरे वाले स्थानों की एक सूची तैयार कर नगर परिषद में जमा करवा दी। लेकिन काफी समय तक उनके वार्ड में लाइट ही नहीं लगवाई गई। जब उन्होंने इसकी जांच की तो नगर परिषद से उन्हें एक पेपर मिला, जिसमें वार्ड नंबर-13 में 30 लाइटें लगाई जाने की डिटेल दर्ज थी। हैरत की बात यह है कि इस सूची में नामों के आगे जो फोन नंबर दर्शाए गए हैं, वह मोबाइल नंबर बहादुरगढ़ तो क्या देश में ही उपलब्ध नहीं हैं। जहां लाइटें लगाई गई हैं, वहां से पुरानी लाइटें चोरी हो रही हैं। उन्होंने नगर परिषद अधिकारियों से कहा कि जल्द से जल्द उनके वार्ड समेत जरूरत अनुसार पूरे शहर में स्ट्रीट लाइटों को लगवाया जाए।

गली निर्माण का कार्य बेरी गेट निवासियों ने रुकवाया

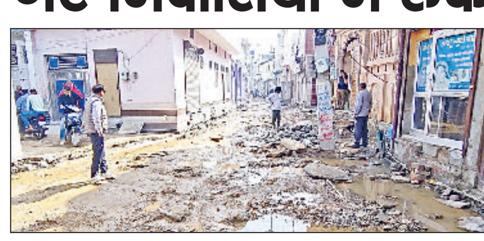
झज्जर। बेरी गेट क्षेत्र में उखाड़ी गई गली और भरा सीवरेज का पानी।

■ सड़क निर्माण से पहले सीवरेज व्यवस्था दुरुस्त करवाने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

शहर के बेरी गेट क्षेत्र निवासियों ने गली निर्माण का कार्य को रुकवा दिया है। लोगों का कहना है कि बिना सीवरेज व्यवस्था दुरुस्त किए सड़क निर्माण कराना समस्या को और बढ़ा देगा। मोहल्ला निवासी सुनील जांगड़ा, सुभाष जांगड़ा, शिव कुमार, रामपत ठेकेदार, राजेश प्रजापति, रवि जांगड़ा, सुखबीर जांगड़ा ,देवीदयाल प्रजापति ,श्याम लाल जांगड़ा ने बताया कि पिछले कई महीनों से सीवरेज लाइन जाम है, जिससे गंदा पानी सड़कों और गलियों में भर जाता है। बरसात के दिनों में स्थिति और भी खराब हो जाती है। उन्होंने कहा कि यदि पहले सड़क बना दी गई तो बाद में सीवरेज सुधार के लिए उसे फिर से तोड़ना पड़ेगा, जिससे सरकारी धन की भी बर्बादी होगी। उन्होंने कहा कि जब तक सीवरेज लाइन की सफाई और मरम्मत नहीं होती, तब तक गली निर्माण नहीं होने दिया जाएगा। इस संबंध में सीएम विंडो व समाधान शिविर में भी शिकायत दी जाएगी।

एनएसएस कैंप में पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

बहादुरगढ़। छारा के चौधरी हरद्वारी लाल राजकीय महाविद्यालय में साप्ताहिक एनएसएस शिविर के दूसरे दिन अनेक गतिविधियां हुईं। प्राचार्या डॉ. सविता पुनिया व डॉ. अनीता दलाल के दिशा निर्देशन तथा प्रोग्राम ऑफिसर डॉ. ललिता की देखरेख में पर्यावरण संरक्षण और नारी सशक्तिकरण पर व्याख्यान हुए। दूसरे दिन डॉ. रीना द्वारा योग सत्र के साथ कैंप शुरू करवाया गया। उन्होंने विद्यार्थियों को विभिन्न योगाभ्यास करवाए। मुख्य वक्ता के रूप में राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ से डॉ. सुमन हुड्डा ने पर्यावरण संरक्षण एवं सुरक्षा विषय पर व्याख्यान देते हुए पर्यावरण और मानव जीवन के परस्पर संबंधों को विस्तार से समझाया। उन्होंने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रहने और दैनिक जीवन में छोटे-छोटे प्रयासों के माध्यम से प्रकृति की रक्षा करने का संदेश दिया। राजकीय महिला महाविद्यालय बहादुरगढ़ में संस्कृत प्रोफेसर डॉ. सीमा ने नारी सशक्तिकरण विषय पर प्रेरणादायक व्याख्यान दिया। उन्होंने समाज में नारी शक्ति की विविध भूमिकाओं, उनके संघर्षों तथा उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। साथ ही सफल महिलाओं के उदाहरण प्रस्तुत कर विद्यार्थियों को प्रेरित किया। कैंप के दौरान डॉ. संजय देसवाल, डॉ. अश्वनी कुमार, मोनिका, डॉ. रेखा, ज्योति, डॉ. मुकेश, डॉ. सीमा आदि उपस्थित रहे।

बाल विवाह की रोकथाम में सहयोग देने की दिलाई शपथ

झज्जर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण व एमडीडी ऑफ इंडिया द्वारा चलाई जा रही बाल विवाह मुक्ति रथ यात्रा शनिवार को क्षेत्र के गांव रामपुरा, जौंधी, गिरावड, महराणा, छारा, मातन व बिरधाना में पहुंची। टीम सदस्यों ने ग्रामीणों को बाल विवाह की रोकथाम के लिए जागरूक करते उन्हें समाज में फैली इस बुराई को जड़ से मिटाने में सहयोग देने संबंधी शपथ भी दिलाई। जागरुकता यात्रा के दौरान शरबती देवी, रामपुरा ग्राम सरपंच बीरेंद्र, दलाल खाप चौदह के प्रधान जोगेंद्र, प्राचार्या अनिता दलाल, जिला परिषद के वाइस चेयरमैन राजीव दलाल, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से पैरा लीगल वालिंटियर कर्मजीत छिल्लर, सामुदायिक कार्यकर्ता संदीप जांगड़ा, गिरावड़ ग्राम सरपंच सविता, रिवाड़ी खेड़ा सरपंच रणवीर सिंह, ब्लाक समिति सदस्या पूनम आदि ने भी अपने विचार रखे।

पूर्व विद्यार्थियों को किया सम्मानित

झज्जर। निदेशक नविंद्र कुमार के साथ उपस्थित निशांत व बलवंत।

झज्जर। दा हाइट्स में स्कूल के दो पूर्व विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि के लिए पुरस्कृत किया गया। संस्थान निदेशक नविंद्र कुमार ने बताया कि संस्था के पूर्व छात्र निशांत को एमडी मेडिकल कॉलेज लखनऊ में चयनित होने तथा एयर फोर्स में कार्यरत बलवंत के प्रमोशन पर मेडल पहनाकर सम्मानित किया गया। दोनों होनहार विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए उन्होंने कहा कि सफलता निरंतर प्रयास से ही संभव है। इसका कोई शॉटकट नहीं है।

अनाजमंडी में गेट पास और साफ-सफाई व्यवस्था रखें पूरी : चेयरमैन

■ मार्केट कमेटी चेयरमैन ने फसल खरीद को लेकर बैठक में दिए निर्देश

बहादुरगढ़। फसल खरीद से जुड़ी तैयारियों को लेकर शनिवार को मार्केट कमेटी चेयरमैन विनोद कौशिक ने अधिकारियों की एक महत्वपूर्ण बैठक ली। बैठक में आने वाली रबी की मुख्य फसलों गेहूं, सरसों और चना की खरीद से जुड़ी तैयारियों की विस्तार से समीक्षा की गई। इस दौरान वाइस चेयरमैन प्रदीप गुप्ता भी मौजूद रहे। चेयरमैन विनोद कौशिक ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि मंडी में किसानों को किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए। उन्होंने विशेष रूप से गेट पास व्यवस्था को सुचारू रखने, पर्याप्त लाइट की व्यवस्था, साफ-सफाई, पीने के स्वच्छ पानी तथा शौचालयों की उचित व्यवस्था सुनिश्चित करने पर जोर दिया। रबी सीजन के दौरान मंडी में किसानों की संख्या अधिक रहती है, इसलिए सभी मूलभूत सुविधाएं पहले से ही मजबूत कर ली जाएं ताकि किसानों को परेशानी का सामना न करना पड़े। मंडी में नाप-तोल की प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी और निष्पक्ष होनी चाहिए। किसी भी प्रकार की हेराफेरी या लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बैठक में अधिकारियों से मंडी परिसर की व्यवस्थाओं का नियमित निरीक्षण करने और समस्याओं का त्वरित समाधान करने के निर्देश दिए गए। सीजन के दौरान अतिरिक्त कर्मचारियों की जरूरत होने पर समय रहते व्यवस्था करने को कहा गया, ताकि खरीद प्रक्रिया में कोई बाधा न आए।

मेरी भाषा-मेरी पहचान, हरियाणवी भाषा पर हम सब नै मान

झज्जर। निपुण हरियाणा मिशन के अंतर्गत जिले के सभी प्राथमिक विद्यालयों में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान भाषा विविधता को प्रोत्साहित करने, समुदाय और अभिभावकों की भागीदारी को मजबूत करने तथा प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया। इस आयोजन का उद्देश्य विद्यालयों में स्थानीय बोलियों और परंपराओं को कक्षा गतिविधियों का हिस्सा बनाकर एक समृद्ध भाषा वातावरण तैयार करना रहा। कार्यक्रम के माध्यम से मौखिक भाषा विकास, समझ कौशल और कक्षा में सहभागिता को बढ़ावा दिया गया। विद्यार्थियों ने सुनाई कविता, पढ़े स्लोगन : राजकीय प्राथमिक पाठशाला सुर्खपुर के स्कूल मुखिया विजेंद्र कुमार ने बताया कि भेजे गए पत्र के अनुसार आयोजित मेरी मातृभाषा-मेरी पहचान गतिविधि के अंतर्गत शनिवार को विद्यार्थियों ने स्लोगन व कविता पढ़ कर सुनाई। इस दौरान एसएमसी प्रधान सुमन देवी ने मुख्य रूप से शिरकत की। उन्होंने बताया कि बेहतरीन उच्चारण करने वाले विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री के सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। इस मौके पर गीता देवी, रेणू, कविता, सुनील, अशोक, सुरेंद्र, मंदीप सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

झज्जर। कैंब्रिज इंटरनेशनल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भदाना में शनिवार को टिनी टॉट्स टैलेंट शो का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय निदेशक धर्मेंद्र जून ने किया। प्रतियोगिता के अंतर्गत विद्यार्थियों ने फैंसी ड्रेस, सोलो डांस, ग्रुप डांस, कविता गायन व अभिनय की प्रस्तुति देते हुए अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। फैंसी ड्रेस में विद्यार्थियों ने विभिन्न नेताओं,अभिनेताओं, शिक्षकों, डॉक्टरों, सेना के जवानों एवं अन्य प्रेरणादायक पात्रों का अभिनय कर दर्शकों का मन मोहा। निदेशक धर्मेंद्र जून ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं तथा उनकी छिपी प्रतिभा को उजागर करने का अवसर प्रदान करती हैं। इस मौके पर एक्टिविटी इंचार्ज तुशिका, संगीता, सुषमा, अनु, प्रीति शर्मा, ज्योति गुलिया, मीनाक्षी, आंचल, कविता, प्रियंका, मोनिका व गुड़िया सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

पुलिस ने खुले कटों पर लगवाए चेतावनी बोर्ड

बहादुरगढ़। चेतावनी बोर्ड लगवाते पुलिस अधिकारी।

बहादुरगढ़। सड़क सुरक्षा अभियान के तहत पुलिस ने खुले कटों पर चेतावनी बोर्ड लगाए। एएसआई राजेंद्र कुमार ने बहादुरगढ़ के सेक्टर 16-17 क्षेत्र में विशेष अभियान चलाया। इसके तहत बाईपास और मुख्य सड़क के बीच मौजूद कटों को चिह्नित कर वहां दुर्घटनाओं से बचाव के लिए चेतावनी और सुरक्षा संबंधी बोर्ड लगवाए गए। सड़क सुरक्षा नियमों को लेकर वाहन चालकों को जागरूक किया गया। सुरक्षित ड्राइविंग के महत्व के बारे में जानकारी दी।

देशभक्ति गीत प्रतियोगिता में नेहा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया

तालाब का भ्रमण कर छात्राओं ने किया श्रमदान

वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय के गांव बामड़ोली में आयोजित एनएसएस शिविर का 5वां दिन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। कैंप के दौरान बामड़ोली के तालाब पर पहुंची स्वयंसेविकाएं। फोटो : हरिभूमि

गांव बामड़ोली में चल रहे वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय के साप्ताहिक एनएसएस शिविर के 5वें दिन स्वच्छता अभियान विषय पर जागरूकता रैली एवं प्रेरक व्याख्यान आयोजित किए गए। स्वयंसेविकाओं ने प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा के साथ तालाब का भ्रमण किया। देशभक्ति गीत प्रतियोगिता में नेहा ने प्रथम स्थान, कोमल मानी ने द्वितीय स्थान तथा आभा व खुशबू ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शिविर में स्वयंसेविकाओं द्वारा श्रमदान भी किया गया। स्वच्छता अभियान के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए निकाली गई जागरूकता रैली को प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। स्वयंसेविकाओं ने पोस्टर एवं बैनरों के माध्यम से स्वच्छता का संदेश देते हुए ग्रामीणों को स्वच्छ वातावरण बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। पलवल की श्री विश्वकर्मा यूनिवर्सिटी से आई डॉ. पिंकी ने आत्मनिर्भर भारत विषय पर व्याख्यान दिया। स्थानीय कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन, हस्तशिल्प एवं पारंपरिक कला को आधुनिक डिजाइन एवं विपणन से जोड़ने तथा कौशल विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया।

खबर संक्षेप

बाजार गई किशोरी के अपहरण की आशंका

बहादुरगढ़। जाखोदा से संदिग्ध परिस्थितियों में एक किशोरी लापता हो गई। काफी तलाशने के बाद भी उसका कुछ अता पता नहीं चल सका। परिजनों द्वारा अगवा किए जाने की आशंका जताई जा रही है। हरदोई यूपी की शमीमजहां का कहना है कि उसकी 14 वर्षीय बेटी 17 फरवरी को घर से बाहर बाजार की तरफ गई थी लेकिन वापस नहीं आई। हमें शक है कि किसी ने उसको अगवा किया है।

अवैध हथियार सहित युवक किया गिरफ्तार

बहादुरगढ़। पुलिस की अपराध जांच शाखा प्रथम ने आसौदा थाना क्षेत्र से अवैध हथियार सहित युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान जगजीत निवासी निलोठी के रूप में हुई है। नेशनल हाइवे पर केएमपी पुल के नीचे से उसे काबू किया गया। उसके पास से पिस्तौल और चार कारतूस बरामद हुए।

बेटे के जन्मदिन पर की गोसेवा

बहादुरगढ़। वार्ड नंबर-24 निवासी यशपाल हिंदुस्तानी ने अपने बेटे हार्दिक के जन्मदिन के अवसर पर परिवार सहित गोसेवा का कार्य किया। गायों को हरा चारा एवं गुड़ खिलाया। उनके अनुसार बच्चों को बचपन से ही सेवा, संस्कार और करुणा की शिक्षा देना अत्यंत आवश्यक है। ऐसे कार्यों से समाज में सकारात्मक संदेश जाता है।

27 को निकलेगी श्याम बाबा की ध्वजा यात्रा

बहादुरगढ़। शहर में 27 फरवरी को बाबा श्याम की भव्य ध्वजा यात्रा निकाली जाएगी। यह पावन यात्रा प्रातः 8 बजे प्राचीन श्री परशुराम मंदिर से पूजा-अर्चना के साथ प्रारंभ होगी। ध्वजा यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग लेंगे। भजन-कीर्तन करते हुए श्रद्धालु शहर के विभिन्न मार्गों से होकर गुजरेंगे।

सट्टा खाईवाली करते युवक को पकड़ा

बहादुरगढ़। पुलिस की एंटी नारकोटिक सेल ने लाइनपार क्षेत्र से सट्टा खाईवाली के आरोप में युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान प्रिंस के रूप में हुई है। गुप्त सूचना के आधार पर शंकर गार्डन के निकट से उसे पकड़ा गया है। उसके पास से 2030 रुपये व सट्टा पर्चियां बरामद हुई हैं। आरोपी के खिलाफ लाइनपार थाने में केस दर्ज किया गया है।

लूटपाट करने मामले में एक आरोपी पकड़ा

झज्जर। पुलिस की एक टीम द्वारा दुजाना में घर में घुसकर लूटपाट करने मामले में कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। दुजाना थाना प्रभारी निरीक्षक राकेश ने बताया कि पुलिस को दी शिकायत में बताया कि बीते वीरवार को गोदाम पर ताला लगाकर वापिस घर आई तो पाया कि घर का दरवाजा खुला था। जैसे ही वह अंदर गई,अज्ञात युवक जिसने अपने मुंह पर कपड़ा बांधा हुआ था,उस पर हमला कर दिया जिससे वह बेहोश हो गई। होश आने पर उसने देखा कि घर की अलमारी से नगदी, सोने के आभूषण और उनके कानों में पहने सोने के बाले गायब थे। इसी ममाले में आरोपी मुजबिल निवासी दुजाना को पकड़ा गया है।

नूना माजरा में महिला फुटबॉल चैंपियनशिप का आगाज

दिल्ली और यूपी की लड़कियों ने जीते शुरुआती मुकाबले, रोहतक का मैच ड्रा

■ प्रतियोगिता में दिल्ली, हरियाणा, यूपी और राजस्थान आदि की 20 टीमें दिखाएंगी दमखम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। अतिथियों व कोचों के साथ टीम की खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

गांव नूना माजरा में दो दिवसीय पहली ओपन महिला फुटबॉल चैंपियनशिप का शनिवार को आगाज हो गया। शुरुआती मुकाबला दिल्ली की टीम ने जीता। पहले दिन कई रोमांचक मुकाबले हुए। रविवार को निर्णायक मुकाबले खेले जाएंगे।

समस्त ग्रामवासियों की ओर से गांव के शहीद राजेश स्टेडियम में यह आयोजन किया गया है। सरपंच मास्टर जयभगवान की अध्यक्षता में आयोजित इस प्रतियोगिता में दिल्ली, हरियाणा, यूपी, राजस्थान, पंजाब की लगभग 20 टीमों ने उपस्थिति दर्ज कराई है। डीएफए झज्जर के पदाधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि के रूप में ब्लॉक समिति चेयपर्सन रचिता जूनने शिरकत की। वहीं, हरियाणा ओलंपिक संघ के उपाध्यक्ष अनिल खत्री, सुरेश जून, एसआई बलवान सिंह, कमल सिंह यादव, प्रेम सिंह आदि अतिथियों ने भी खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। डीएफए सेक्रेट्री सुरेश जून व अन्य पदाधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत किया। पहला मैच एचओपीएस दिल्ली व गवर्मेंट कॉलेज बादली की टीम के बीच खेला गया। दिल्ली की टीम ने 2-0 के अंतर से जीतकर अपने सफर का आगाज किया। यूपी और रोहतक के बीच हुआ दूसरा मैच बराबरी पर रहा। इसके अलावा कई अन्य रोमांचक मुकाबले हुए, जिनका खेल प्रेमियों ने लुत्फ उठाया। कोच सुदर्शन, मनीषा, जांगड़ा, सुनीता जून, रितु रानी, मुनेश कुमारी, शिवानी माछरौली, निशी की देखरेख में मुकाबले चल रहे हैं। मंगतराम, देवेंद्र जून, जयभगवान दरोगा, नरेंद्र प्रधान, शमशेर सिंह, दीपक जून सहित अन्य ग्रामीणों ने खिलाड़ियों को खेल भावना से खेलने को प्रेरित किया। सेक्रेट्री सुरेश जून ने कहा कि बेटियों को खेलों के प्रति बढ़ावा देने के लिए यह आयोजन किया जा रहा है। रविवार को निर्णायक मुकाबले होंगे। नगर परिषद चेयपर्सन सरोज राठी विजेता टीम को सम्मानित करेंगी।

कैंप में सैकड़ों लोगों ने कराई स्वास्थ्य जांच

झज्जर। वर्ल्ड मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च द्वारा जिले के गांव खेड़ी आसरा में एक हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। संस्थान के संस्थापक डॉक्टर नरेंद्र सिंह के नेतृत्व में आयोजित इस कैंप में हॉस्पिटल के मेडिसिन विभाग, सर्जरी विभाग, नेत्र रोग विभाग, नाक, कान व गला रोग, हड्डी रोग, स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग के विशेषज्ञों ने लोगों की स्वास्थ्य जांच की। कैंप की अध्यक्षता कम्युनिटी मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डॉक्टर चरण सिंह ने की। कैंप में पहुंचे लोगों की स्वास्थ्य जांच के बाद विशेषज्ञों द्वारा जहां जरुरतमंद रोगियों को निःशुल्क दवाएं प्रदान की गई वहीं आवश्यक परामर्श भी प्रदान किए गए।

नेशनल ट्रायल में प्राची चाहर की पहली रैंक

झज्जर। एचआर ग्रीन फील्ड विद्यालय की प्रतिभाशाली छात्रा व मुक्केबाज प्राची चाहर ने नेशनल ट्रायल में टीम सर्विसेज की ओर से खेलते हुए फर्स्ट रैंक हासिल की है। प्राचार्य मोहिंद्र सिंह ने बताया कि प्रशिक्षक हितेश देशवाल के निरीक्षण में प्राची अब मार्च माह में थाईलैंड में होने वाले वर्ल्ड कप में अपनी प्रतिभा दिखाएगी। इस उपलब्धि पर विद्यालय प्रबंधक विकास धनखड़, प्रदीप धनखड़ व प्राचार्य मोहिंद्र सिंह गुलिया ने प्राची को सम्मानित करते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

चिकित्सकों के लिए साक्षात्कार

बहादुरगढ़। नूना माजरा स्थित महाराजा अग्रसेन केदारनाथ गुप्ता मेडिकल कॉलेज में शनिवार को वॉक-इन इंटरव्यू का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न विभागों के प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर व सीनियर रेजिडेंट पदों के लिए बड़ी संख्या में योग्य अभ्यर्थियों ने भाग लिया। ट्रस्ट के मुख्य सलाहकार डॉ. सुशील गुप्ता, अध्यक्ष डॉ. मीना गुप्ता, डॉ. ओपी कालरा, डॉ. पूनम अग्रवाल व डॉ. हर्ष राज नेहरा ने अभ्यर्थियों का साक्षात्कार लिया और उनकी शैक्षणिक योग्यता, अनुभव एवं विशेषज्ञता का विस्तृत मूल्यांकन किया। उनके अनुसार चयनित उम्मीदवारों के माध्यम से मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की शैक्षणिक और चिकित्सकीय सेवाओं को और अधिक सुदृढ़ किया जाएगा।

परनाला के स्कूल में विजेता विद्यार्थियों का किया सम्मान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

कुरुक्षेत्र में आयोजित राज्य स्तरीय कानूनी साक्षरता क्विज प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को परनाला गांव स्थित पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में सम्मानित किया गया। सुनहरा कल फाउंडेशन एवं द्रोणाचार्य कोचिंग सेंटर ने शनिवार को यह कार्यक्रम आयोजित किया।

मयंक, संजीत व खुशी रहे तृतीय

इस स्टेट लेवल की क्विज प्रतियोगिता में कक्षा 12वीं के विद्यार्थी मयंक, संजीत व खुशी ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए तृतीय स्थान प्राप्त कर स्कूल का नाम गौरवान्वित किया। वहीं, सामाजिक मुद्दों पर आधारित डॉक्यूमेंट्री प्रतियोगिता में कक्षा 12वीं की छात्रा कामना ने भी उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया। सभी विद्यार्थियों को मंच पर स्मृति चिन्ह, प्रतियोगिता परीक्षाओं की पुस्तकें एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्या संतोष कुमारी ने की। लीगल सेल कमेटी के सदस्य सत्येंद्र दहिया ने लीगल लिटरेसी के महत्व पर प्रकाश डाला। फाउंडेशन की संस्थापक सचिव डॉ. सुनीता छिल्लर, जगबीर सिंह, ट्रैफिक एसएचओ सतीश कुमार, लीगल लिटरेसी ब्लॉक कोऑर्डिनेटर अनिल अहलावत, संजीव कुमार, एडवोकेट कार्तिक खंडेलवाल व दिनेश कुमार आदि उपस्थित रहे।

जीएवी के तीन विद्यार्थियों ने पाई जेईई मेंस में सफलता

■ लियांक मिश्रा को 99 .45 , कौशल को 98 .96 तथा जतिन को 90 .91 परसेंटाइल मिला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

जीएवी स्कूल पाटौदा के तीन विद्यार्थियों ने जेईई मेंस में क्वालिफाई किया गया। स्कूल के संस्थापक अशोक कुमार शर्मा ने बताया कि नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा घोषित जेईई मेंस में स्कूल के छात्र लियांक मिश्रा ने 99.45 परसेंटाइल, कौशल ने 98.96 परसेंटाइल तथा जतिन ने 90.91 परसेंटाइल के साथ परीक्षा में सफलता हासिल की। उन्होंने तीनों विद्यार्थियों की सफलता का श्रेय शिक्षकों के मार्गदर्शन व अभिभावकों के सहयोग को दिया। उन्होंने कहा कि तीनों होनहार विद्यार्थियों को जल्द ही एक सम्मान समारोह का आयोजन कर सम्मानित किया जाएगा। इस मौके पर प्रिंसिपल विपिन कुमार, स्कूल हेड टीचर सुमिला यादव, रवि कुमार, देवेंद्र कुमार, अनूप शर्मा, किशोर कुमार, आकाश, सविता शर्मा, सरिता तंवर सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

फ्रेशर वेट-ओ-मानिया पार्टी में छात्रों ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुति

■ राज्य क्राइम ब्रांच की एसीपी गरिमा सिंह ने शिरकत की।

■ एमआर कॉलेज ऑफ वेटरनरी साइंस एंड रिसर्च सेंटर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

एमआर कॉलेज ऑफ वेटरनरी साइंस एंड रिसर्च सेंटर में फ्रेशर वेट-ओ-मानिया पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यतिथि के रूप में राज्य क्राइम ब्रांच की एसीपी गरिमा सिंह ने शिरकत की। विशिष्टातिथियों में पशुपालन विभाग से उपनिदेशक डॉक्टर मनीष डबास, एसीपी सुरेंद्र सिंह, एसएचओ किरण, जिला शिक्षा अधिकारी रतींद्र सिंह, उप जिला शिक्षा अधिकारी अनिल कुमार शर्मा उपस्थित रहे। संस्था के चेयरमैन रणबीर कोडान, प्रबंधक निदेशक सोमबीर कोडान, संगीता कोडान, कॉलेज मैनेजर राहुल कोडान तथा कॉलेज के डीन डॉक्टर जगतबीर फोगाट ने अतिथियों का स्वागत किया।

पार्टी में जूनियर और सीनियर विद्यार्थियों ने डांस, सिंगिंग और फैशन शो जैसी रंगारंग प्रस्तुतियों से समां बांधा। उन्होंने हरियाणा, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, दिल्ली और पंजाब की सांस्कृतिक झलक की प्रस्तुति देते हुए विविधता में एकता का संदेश दिया। प्रबंधक निदेशक सोमबीर कोडान ने अतिथियों के समक्ष कॉलेज की विकास यात्रा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि संस्थान ने स्थापना से अब तक कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। आधुनिक प्रयोगशालाएं, अनुभवी संकाय सदस्य एवं नवीनतम तकनीकों से सुसज्जित यह संस्थान पशु चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। डीन डॉक्टर जगतबीर फोगाट ने कहा कि संस्थान का उद्देश्य केवल अकादमिक ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। मुख्यातिथि गरिमा सिंह ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को बढ़ावा देते हैं।

महारास लीला और कृष्ण रुक्मणी विवाहोत्सव मनाया

बहादुरगढ़। महावीर मंदिर में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के छठे दिन श्रद्धालु भक्ति रस में सराबोर नजर आए। कथा के दौरान महारास लीला, मथुरा गमन और भगवान श्रीकृष्ण-रुक्मणी विवाह उत्सव का अत्यंत भावपूर्ण और मनमोहक वर्णन किया गया। श्रीधाम वृंदावन से आए हित चरण श्री अतुल कृष्ण शास्त्री जी महाराज ने महारास लीला का आध्यात्मिक महत्व बताते हुए कहा कि यह लीला जीव और परमात्मा के दिव्य मिलन का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि जब मनुष्य पूर्ण श्रद्धा और प्रेम से भगवान का स्मरण करता है, तब जीवन में सच्चे आनंद की प्राप्ति होती है। कथा में भगवान श्रीकृष्ण के मथुरा गमन प्रसंग का वर्णन करते हुए महाराज जी ने कंस वध की भूमिका और धर्म स्थापना के संदेश को विस्तार से समझाया। इसके पश्चात कृष्ण-रुक्मणी विवाह उत्सव का प्रसंग सुनाया गया, जिसे सुनकर पंडाल में उपस्थित श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे।

मार्केट न्यूज

पेस ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस में आईआईटी मेन्स का शानदार परिणाम, भव्य जश्न मनाया

झज्जर। पेस ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस में आईआईटी मेन्स के शानदार परिणाम पर भव्य जश्न मनाया गया। संस्थान परिसर में मेधावी विद्यार्थियों का गुलाब की पंखुड़ियों, मालाओं और रिबन कटिंग के साथ जोरदार स्वागत किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत स्टाफ और विद्यार्थियों द्वारा रिबन काटकर की गई। इसके बाद सफल छात्रों को मालाएं पहनाकर और गुलाल लगाकर सम्मानित किया गया। खुशी का माहौल ऐसा था कि विद्यार्थी, विषय विशेषज्ञ और प्रबंधन एक साथ मंच पर झूम उठे। संस्थान के डायरेक्टर जय विकास ने बताया कि खंगाई गांव के रुपेश ने 99.4 परसेंटाइल के साथ जिला टॉपर बनकर संस्थान का नाम रोशन किया। झज्जर के रेयांश कटारिया ने 99.3, मेन मार्केट झज्जर के नीव ने 99.04, छारा चुंगी की महक ने 98.7, गुड्डा के अभिषेक ने 98.4, गोच्छी की वंशिका ने 98, पासौर के विद्यार्थी ने 97.25, सुभाष नगर की कंचन ने 97.15, छावनी की सिमरन ने 97, खरमान के नमित ने 96, कवर कॉलोनी की दिव्या हुड्डा ने 95, सेक्टर-6 के सौम्य ने 94, धौर के लोकेश ने 94 तथा झज्जर के दीपांशु ने 93 परसेंटाइल प्राप्त कर सफलता हासिल की।

रोहतक
रविवार 22 फरवरी 2026
फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष, पंचमी वर्ष : 30, अंक : 19
पृष्ठ 14 मूल्य 3.00

मौसम
अधि. 29.1
न्यून. 10.3

हरिभूमि

हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
समाचार ही नहीं, विचार भी
haribhoomi.com

05 सुपर-8 : रणनीति में बदलाव के बाद सूर्या और तिलक पर दारोमदार

SANSKARAM GROUP OF SCHOOLS

संकल्प से समाधान तक
ADMISSIONS OPEN FOR SESSION : 2026-27

THE TIMES OF INDIA
Awarded with Times School Survey award 2025-26

Congratulations
JEE MAIN ACHIEVERS 2026

99.13 %ile Muskan D/o Govind Koelpur
99.01 %ile Shubham S/o Ranbir Kheri Khummar

99.67 %ile in Maths Yash Kadian S/o Jagbir Beri
97.14 %ile Navanshu S/o Hemdutt Paharipur
97 %ile Taksikha D/o Vijay Kabulpur
96.67 %ile Anuj S/o Sunil Kumar Baghpur
96.43 %ile Saina D/o Rajesh Kumar Jahazgarh
96.3 %ile Kunal Siwach S/o Rakesh Paharipur
96.28 %ile Vidhi D/o Sandeep Jhajjar
95.84 %ile Irfan Khan S/o Abdul Sattar Dubaldhan
95.8 %ile Kanika D/o Balwan Singh Kheri Khummar
95.3 %ile Nitika D/o Harish Kumar Silani
94.54 %ile Harshita D/o Bhupender Babra
94.2 %ile khushi D/o Arun kumar kheri khummar
94.3 %ile Jitender S/o Parveen Koelpur
93.99 %ile Hitender S/o Dipesh Dujana
91.8 %ile kunal Sehrawat S/o Jitender Jhajjar
91.07 %ile Jatin S/o Sanjay Kumar Jhajjar
92.23 %ile Armaan S/o Vinod Jhajjar
91.3 %ile Rashi D/o Pawan Jhajjar
90.26 %ile Phalak D/o Vikash Singh Majra D
90.13 %ile Mann S/o ravinder Yadav kheri khummar
90.02 %ile khanan D/o Rajender Jhajjar

Separate Hostel Facility for Boys & Girls
- Fully safe and supervised hostel facilities
- 24×7 security & trained wardens
- Hygienic, nutritious multi-cuisine meals
- Well-maintained, comfortable living rooms

Officially First Pilot!
Congratulations
for Clearing Your DGCA CPL Exam
Licensed Commercial Pilot | DGCA Certified | India
ROUNAK KUMAR
S/o Mr. Sandeep / Jhajjar

Recommended For Lieutenant
RAKSHIT JANGRA
S/o Vikash Sharma / Jhajjar

Proud NDA Recommended
MANDEEP S/o SUKDARSHAN VILL : NIMLI
HARSH S/o ANIL VILL : TALAO
AAKASH S/o MUKESH VILL : MP MAJRA
KUNAL S/o MANJEET VILL : CHIMNI
RITIKA D/o DEVENDER VILL : JHAJJAR
RAKSHIT S/o VIKASH JHAJJAR
VIKASH S/o RAVINDER VILL : MATANHAIL
MANJEET S/o ASHOK VILL : MUNDSA
KUNAL S/o MANJEET VILL : CHIMNI
JATIN S/o RAJESH JHAJJAR
DUSHYANT S/o RAJESH JHAJJAR
SAGAR S/o SHISHPAL ROHTAK
ROHIT S/o VINAY VILL : JAHAZGARH
SIDDHARTH S/o PARDEEP VILL : SILANI
AJAY S/o DEVENDER VILL : DHAUR
GHANSHYAM S/o SATYAPARKASH VILL : WAZIRPUR

Class - XII Board School Toppers
98.2% COMMERCE TOPPER YASHIKA D/o RAJEEV JHAJJAR
97.8% ART TOPPER PRACHI D/o SANDEEP BERI
97.2% SCIENCE TOPPER LAVANYA D/o JITENDER BERI
97.2% SCIENCE TOPPER YOGEETA D/o SURENDER JHAJJAR
96.2% PRACHI D/o SOMBIR GIRAWAR
96.2% SRISHTI D/o AJAY JHAJJAR

Class - X Board School Toppers
97.4% BHAVYA D/o SACHIN BERI
97.2% PARI D/o UTTAM GOCHHI
97.2% HARSHIT S/o VIVEK BERI
96.8% PARTH S/o SANDEEP BERI
96.4% BHAVYA D/o PARVEEN JHAJJAR
96.2% KUNJAN D/o NEERAJ DULHERA

SANSKARAM UNIVERSITY
ADMISSION OPEN FOR SESSION 2026-27
ENGINEERING | VETERINARY | AYURVEDA | MANAGEMENT
LAW | PHYSIOTHERAPY | AGRICULTURE | RADIOGRAPHY
PHARMACY | OPTOMETRY | Ph.D Available in all above Disciplines

JHAJJAR CAMPUS : 8222889860,62 | PATAUDA CAMPUS : 9053007801,02
NH.334B, Main Dadri Road, Khatiwas, Jhajjar (Haryana)
NH.352, Pataudа, Near Kulana, Jhajjar (Haryana)

कहीं से भी काम करने की आजादी

वर्क फ्रॉम एनीवेयर

कुछ साल पहले तक वर्क फ्रॉम होम के बारे में कम ही लोग जानते थे। लेकिन आज कंडीशन इससे भी एक कदम आगे बढ़कर वर्क फ्रॉम एनीवेयर तक पहुंच चुकी है। कई सर्विस सेक्टर्स ऐसे हैं, जिसमें यह वर्क मोड खूब पॉपुलर हो चुका है। इस मोड के अनेक फायदे हैं तो कुछ कमियां भी हैं। इन सबके बारे में आप जरूर जानना चाहेंगे।

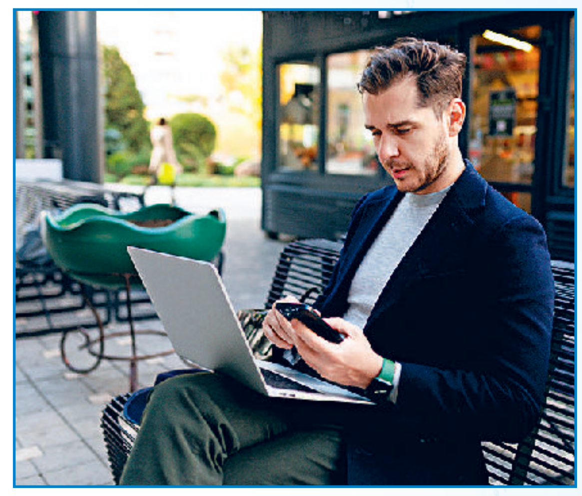

कवर स्टोरी / कीर्तिशेखर

करीब पांच वर्ष पहले कोरोना महामारी ने कार्यशैली में जिस बदलाव को मजबूरी में शुरू कराया था, वह अब स्थायी जीवनशैली का विकल्प बनता जा रहा हैं। पहले सवाल था- क्या घर से काम करना संभव है? अब सवाल बदल चुका है- क्यों न कहीं से भी काम किया जाए? इसी सवाल से जन्म होता है, वर्क फ्रॉम एनीवेयर की अवधारणा का यानी, ऐसा काम जिसे करने के लिए न तो ऑफिस की दीवारें जरूरी हैं, न किसी तय शहर की सीमा, बस आपका अपना लैपटॉप हो, इंटरनेट कनेक्शन हो और थोड़ी-सी मानसिक एकाग्रता, इसके बाद कहीं पर भी आप अपना ऑफिस वर्क शुरू कर सकते हैं।

ऐसे बदलती गई कार्यशैली: वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को यह सिखाया कि जरूरी नहीं कि हर काम मीटिंग रूम या ऑफिस डेस्क पर ही बैठकर किया जाए। इस अवधारणा ने यह भी बताया कि प्रोडक्टिविटी का मतलब केवल कुर्सी पर बैठना नहीं होता। आउटपुट ज्यादा मायने रखता है। इसके बाद लोगों ने महसूस किया कि अगर घर से काम करना संभव है, तो फिर इंटरनेट की बदौलत कहीं से भी काम करना संभव है। कोरोना और उसके बाद से ही लोगों ने घूमने गए हिल स्टेशनों, समुद्र किनारे या शहर से अपने गांव जाकर घर के एक कोने में बैठकर देश-विदेश की मल्टीनेशनल कंपनियों का काम करने लगे। यहीं से वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट व्यवहार में उतरा।

इसलिए चुन रहे यह तरीका: वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट पॉपुलर होने की कई वजहें हैं। महानगरों में भीड़ बहुत बढ़ती जा रही है। भारी-भरकम किराए के बाद ही किराए का मकान मिलता है, बल्कि वहां जिंदगी भी बहुत मुश्किल भरी हो जाती है। ऑफिस आने-जाने में रोज ट्रैफिक जाम से पाला पड़ता है। परिवार साथ न होने की वजह से खाने की समस्या होती है। घर और परिवार से दूर रहने के कारण हर समय मानसिक अशांति रहती है। इस तरह काम तो होता है, पर जीवन बेचैन रहता है। इसलिए युवाओं का कहना है कि अब वो जीवन के लिए काम करना चाहते हैं, काम के लिए जीवन की हायतौबा नहीं झेलना चाहते। नतीजा यह है कि नई पीढ़ी के बहुत से लोग वर्क फ्रॉम एनीवेयर का विकल्प बड़ी सहजता से चुन रहे हैं, क्योंकि यह विकल्प उन्हें भरपूर आजादी का एहसास कराता है।

इस कॉन्सेप्ट का मेन टार्गेट: वर्क फ्रॉम एनीवेयर के बारे में इस बात को समझना जरूरी है कि इसका मतलब डिजिटल घुमक्कड़ी नहीं है, न ही इसका मतलब है कि कहीं भी घूमते-फिरते रहें और जब मौका मिले या मन करे तो काम कर लें। अगर इस धारणा का मतलब यह हो जाएगा, तब तो काम करना प्राथमिकता नहीं रह जाएगी। प्रोफेशनल्स के लिए उनका वर्क बहुत मायने रखता है। ऐसे में इंटरनेट ने बौद्धिक काम करने वाले लोगों को यह सुविधा तो दी ही है कि अगर हिल स्टेशन पर घूमने जाएं, तो समय निकालकर वहां से भी अपना काम कर सकें। मां-बाप के पास गांव जाएं तो वहां भी साथ अपना काम लेकर जाएं और कहीं किसी जरूरी यात्रा पर निकल रहे हों तो भी अपना काम अपने साथ रख सकते हैं।

इन फील्ड्स में है सफल यह मॉडल: वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट सर्विस सेक्टर में ही संभव है कि आप कहीं से भी अपनी विशेषज्ञता संबंधी सेवाएं अपने नियोक्ता को दे सकें। हर काम वर्क फ्रॉम एनीवेयर के ढांचे में फिट नहीं होता है। बहरहाल, जो काम इस मोड में सही से किए जा सकते हैं, वो क्षेत्र हैं- आईटी और सॉफ्टवेयर, डिजिटल मार्केटिंग, एडिटिंग, कंटेंट राइटिंग, डिजाइनिंग, ऑनलाइन टीचिंग, कस्टमर सपोर्ट-कंसल्टेंसी, एचआर असिस्टेंस और फाइनेंस एनालिसिस भी इस वर्क पैटर्न से संभव है। दूसरे शब्दों में जिन कामों में फिजिकल उपस्थिति या मशीनरी की मौजूदगी की जरूरत नहीं होती, उन क्षेत्रों में यह मॉडल तेजी से अपनाया जा रहा है।

एंप्लॉई-एंप्लॉयर दोनों खुश: कंपनियां इसलिए इस मॉडल को स्वीकार कर रही हैं, क्योंकि इससे उनको भी फायदा है। इससे उन्हें ऑफिस स्पेस पर खर्च नहीं करना पड़ता। ऑफिस चलाने के लिए जो एस्टेब्लिशमेंट खर्च होते हैं, उनसे भी बचाव हो जाता है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि लोगों को भर्ती करने के लिए पूरी दुनिया का दायरा मिल जाता है। कर्मचारी भी इससे संतुष्ट रहते हैं, क्योंकि हर रोज घर से काम करने के लिए नहीं निकलना पड़ता और न ही यात्रा करने की जो परेशानियां और तनाव होती हैं, उनसे निपटना पड़ता है।

कंपनियां भी अब इस बात को समझ चुकी हैं कि अगर सहूलियतों के बीच कर्मचारी को काम करने का मौका मिलता है तो उसका परफॉर्मेंस बेहतर होता है। इसलिए वे ऐसे कर्मचारियों को रखना पसंद करती हैं। इससे कर्मचारियों को सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि उनके रहने और दूसरी जगह पर जाकर खाने-पीने की जो भारी भरकम लागत आती है, उससे छुटकारा मिल जाता है। घर से ऑफिस तक जाने में जो समय लगता है, उससे भी मुक्ति मिल जाती है। यह बचा हुआ समय व्यक्तिगत रुचियों का आनंद लेने और आराम करने के लिए इस्तेमाल होता है। कह सकते हैं इस अवधारणा से काम कराने वाला भी खुश होता है और काम करने वाला भी खुश और दोनों को फायदा होता है।

प्रोफेशनल्स का बचता है टाइम: काम की इस अवधारण का एक फायदा यह है कि लोग दिन में ऑफिस का काम करते हैं और फिर जो उनका दफ्तर तक जाने और आने का समय बचता है। उस समय का उपयोग बागवानी करने, संगीत सीखने, लेखन करने या अपने किसी शौक को पूरा करने के लिए लगाते हैं।

मौजूद हैं कुछ चुनौतियां: इस वर्क मोड में सबसे पहली चुनौती तो यह है कि ये काम वहीं हो सकता है, जहां इंटरनेट की सुविधा अच्छी हो, बिजली की आपूर्ति चौबीसों घंटे हो और काम करने के लिए एक सुरक्षित और एकांत जगह हो। साथ ही वहां दफ्तर जैसा माहौल बनाने की सुविधा हो। इसके अलावा सेल्फ डिसिप्लीन भी जरूरी होता है। कुछ लोग जब खुद निर्णय लेना होता है, तो कंसंट्रेट होकर काम नहीं करते। ऐसे काम करने के तरीके से कई प्रोफेशनल्स का निजी जीवन डिस्टर्ब हो जाता है। वे ऑफिस वर्क में बहुत समय देने लगते हैं। इसलिए बहुत सारे लोग शुरू-शुरू में यह फॉर्मूला अपनाते हैं, लेकिन जल्द ही ऊब कर ऑफिस आने लगते हैं। क्योंकि घर में काम करते हुए उनके वर्किंग ऑवर बहुत बढ़ जाते हैं। वर्क फ्रॉम एनीवेयर करते समय भले तनाव कम होता हो, आजादी खूब महसूस होती हो, लेकिन सामाजिक संपर्क से कट जाते हैं और अकेलेपन की आशंका से घिर जाते हैं। इसलिए कई बार कहीं से भी काम करने की सुविधा का नुकसान मानसिक रूप से बीमार होने के रूप में सामने आता है। इसलिए लोग अब हाइब्रिड मॉडल को बेहतर मान रहे हैं यानी चार दिन घर में और दो दिन दफ्तर में काम करना, सही संतुलन है। हां, महिलाओं को जरूर काम करने की इस शैली का फायदा मिलता है, क्योंकि इसके चलते उन्हें होम मेकिंग और करियर में संतुलन बनाने में मदद मिलती है। *

वर्क फ्रॉम एनीवेयर के लिए जरूरी सुविधाएं

- घर में तेज रफ्तार इंटरनेट कनेक्शन होना जरूरी है।
- घर में लैपटॉप के साथ बैकअप पावर की सुविधा होना जरूरी है।
- घर में काम करने के लिए ऑफिस जैसे स्थान का होना जरूरी है।
- रोज सुबह अनुशासित ढंग से तैयार होकर दफ्तर की तरह काम करना जरूरी है।
- घर से काम करते समय कंप्यूटर और साइबर सिक्योरिटी का ज्ञान भी जरूरी है। अगर कंप्यूटर की बेसिक समझ नहीं है तो कभी-भी अगर लैपटॉप या वर्क स्टेशन में कोई समस्या आ गई, तो तब तक काम नहीं कर पाएंगे, जब तक घर कोई मैकेनिक आकर समस्या हल न करे।
- घर से काम करने के लिए लगातार तकनीक में भी माहिर होते रहना जरूरी है।
- घर से काम करते समय लगातार उत्साह बनाए रखना भी जरूरी है ताकि अपना नियमित रूटीन सही से पूरा कर सकें।

आज के दौर में जीवन को सुविधाजनक बनाने वाला मोबाइल बेशुमार लोगों को अपना लती भी बना रहा है। इसके दुष्प्रभावों से बचने के लिए अब लोग तरह-तरह के उपाय आजमा रहे हैं। इनके बारे में आप भी जानिए।

मोबाइल एडिक्शन से बचने के लिए

आजमाए जा रहे तरह-तरह के उपाय

टेक्नोलाइफ
लोकमित्र गौतम

हर सुबह आंख खुलते ही मोबाइल। रात में सोते समय आखिरी नजर तक मोबाइल। दिन में बीच-बीच में सैकड़ों बार स्क्रीन चेक करना। अब ये किसी व्यक्ति विशेष की आदत नहीं बल्कि ज्यादातर लोगों की लाइफस्टाइल बन गई है। अब मोबाइल में नोटिफिकेशन देखना याद नहीं रखना पड़ता। लोगों की यह स्वतः आदत बन गई है। लेकिन इसी दौर में कुछ और भी दिलचस्प और विरोधाभासी बातें भी हो रही हैं। एक ट्रेंड बहुत तेजी से उभर रहा है और यह है मोबाइल से दूरी बनाने का। नहीं, लोग तकनीक छोड़ नहीं रहे बल्कि उसके साथ नई-नई शर्तों के तहत रिश्ता तय कर रहे हैं। कोई नोटिफिकेशन बंद कर रहा है, कोई फोन ग्रे स्केल पर डाल रहा है, कोई डंब फोन खरीद रहा है, तो कोई रविवार को मोबाइल अलमारी में बंद करके उसमें ताला लगा देता है। मोबाइल को लेकर उसके पक्ष और उसके विरोध में एक से बढ़कर एक आदतें दुनिया का ध्यान खींच रही हैं।

क्यों छोड़ना चाहते हैं फोन: हाल के कुछ सालों में ऐसे कई अनुभव सामने आए हैं, जिससे पता चलता है कि मोबाइल लोगों का ध्यान बहुत जल्दी भटका देता है। यह भी महसूस किया गया है कि लगातार मोबाइल का इस्तेमाल करने से अधूरेपन का एहसास बढ़ जाता है। मोबाइल की लत लग जाए, तो कब देखते ही देखते टाइम फुर्र हो जाता है, पता ही नहीं चलता। इन सबके अलावा हाल के सालों में बिना कुछ किए लोगों को एक ऐसी थकान जकड़ रही है, जो जानकारों के मुताबिक मोबाइल की देन है। ऐसे ही और भी अनेक कारण हैं, जिसके चलते अब लोग मोबाइल से अगर पूरी तरह से नहीं, तो बीच-बीच में कुछ समय तक के लिए पिंड छुड़ाना चाहते हैं। इसलिए इन दिनों लोग मोबाइल से दूर रहने के लिए तरह-तरह के उपाय आजमा रहे हैं। इनमें से कुछ के बारे में बता रहे हैं।

नोटिफिकेशन मिनिमलिज्म: बहुत से लोग अब सिर्फ कॉल और जरूरी एप्स के नोटिफिकेशन ही चालू रखते हैं। व्हाट्सएप ग्रुप, सोशल मीडिया लाइक और ई-मेल अलर्ट, सब कुछ लोग बंद कर रहे हैं। इस कारण फोन हाथ में लेने की अपने आप जरूरत कम रह जाती है। ऐसे उपाय अपनाने वाले लोग बताते हैं- जहां वह पहले 125 से 150 बार तक स्क्रीन अनलॉक करते थे, वहीं ऊपर बताए गए उपाय यानी नोटिफिकेशन मिनिमलिज्म के बाद अब ये संख्या घटकर 40 से 50 बार रह गई है।

ग्रे स्केल मोड: इसका मतलब है फोन की रंगीन स्क्रीन को ब्लैक एंड व्हाइट में बदल देना। फोन की दुनिया काली-सफेद होते ही लोगों का रील्स में आकर्षण घट जाता है और स्क्रॉल करने का मन ही नहीं रह जाता। यह एक छोटा-सा उपाय है, लेकिन इसके बेहद असरदार मनोवैज्ञानिक नतीजे हासिल होते हैं। इसके साथ ही कुछ लोग अपने फोन में डाउनलोड किए गए हर मीडिया एप के लिए दिन में 20 से 30 मिनट की लिमिट तय कर देते हैं और लिमिट खत्म होते ही यह एप अपने आप ही लॉक हो जाते हैं, जिससे इनसे मुक्ति मिल जाती है। ये उपाय शुरू में तो झुंझुलाहट पैदा करता है, मगर 3-4 दिन के बाद इसकी आदत बन जाती है।

फोन मुक्त दिन की शुरुआत: कुछ लोग इन दिनों सुबह जगने के बाद एक से दो घंटा तक बिल्कुल मोबाइल के पास नहीं जाते, इस दौरान उनका मोबाइल स्विच ऑफ रहता है। जब तक मोबाइल स्विच ऑफ रहता है, वे फ्रेश होते हैं, चाय पीते हैं, अखबार पढ़ते हैं, एक्सरसाइज का अपना रुटीन खत्म करते हैं या ऐसा कुछ नहीं भी करते हैं तो इस दौरान सिर्फ खिड़की या बालकनी से बाहर झांकते हैं। जो लोग ये उपाय आजमा रहे हैं, उनका अनुभव बताता है कि इससे पूरा दिन शांति महसूस होती है।

सोशल मीडिया फास्टिंग: कुछ लोग सोशल मीडिया फास्टिंग का उपाय भी आजमा रहे हैं। फोन से दूर रहने का यह एक और उपाय है। इसके चलते जैसे कुछ लोग धार्मिक रूप से हफ्ते में किसी एक या दो दिन उपवास रखते हैं। लगभग उसी तरह इस प्रयोग के तहत लोग हफ्ते में एक दिन या 15 दिन में एक दिन फोन से पूरी तरह से दूर रहने का उपाय आजमाते हैं।

बेडरूम से बाहर फोन: कुछ लोग अपने फोन को बेडरूम से बाहर रखकर सोते हैं। इस तरह फोन को बेडरूम से बाहर रखने के बहुत फायदे मिलते हैं। इससे नींद बेहतर आने लगती है। रात की स्क्रॉलिंग खत्म हो जाती है। *

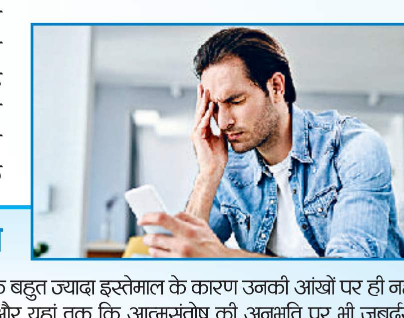

मानसिक स्वास्थ्य के लिए है जरूरी

लोग इस बात को भली-भांति समझने लगे हैं कि फोन के बहुत ज्यादा इस्तेमाल के कारण उनकी आंखों पर ही नहीं, ध्यान लगाने की क्षमता पर, भावनात्मक स्थिरता पर और यहां तक कि आत्मसंतोष की अनुभूति पर भी जबर्दस्त असर पड़ने लगा है। मोबाइल से दूर रहना एक तरह से खुद के पास होने जैसा है। क्योंकि जो लोग बहुत ज्यादा फोन इस्तेमाल करते हैं, उन लोगों के अनुभव बताते हैं कि वो जितना ही ज्यादा फोन में रहते हैं, उतना ही ज्यादा अकेलापन महसूस करते हैं। ऐसे में इससे दूरी बनाने की आदत मानसिक स्वास्थ्य बेहतर बनाती है।

गजल
हबीब कैफी

मोहब्बत में जो लिखता है
अंधेरे में भी दिखता है

वहां कुछ फूल खिलते हैं
जहां वो पांव टिकता है

जिसे सब इश्क कहते हैं
सर-ए-बाजार बिकता है

फकत रोटी नहीं सिकती
तवे पर दिल भी सिकता है

महकता फूल लिखना था
उसी को खार लिखता है

व्यंग्य
महेश कुमार केशरी

प्रभु बचाए ऐसे पड़ोसी से

मेरे घर आ धमकने का पड़ोसी महोदय को बस बहाना चाहिए। कभी चीनी, कभी टमाटर, कभी धनिया पत्ती तो कभी मिर्च गोलकी मांगने चले आते हैं। गोया मेरा घर नहीं, कोई धर्मशाला हो।

कहते हैं, सांप चंदन के पेड़ से हमेशा लिपटे रहते हैं। हालांकि मैं चंदन जैसा तो बिल्कुल नहीं हूं, फिर भी न जाने क्यों आस-पड़ोस के लोग मुझसे लिपटने को आतुर रहते हैं। कुछ ऐसे ही बगल के घर में रहने वाले मेरे एक पड़ोसी भी हैं। मेरे घर आ धमकने का उनको बस बहाना चाहिए। कभी चीनी, कभी टमाटर, कभी धनिया पत्ती तो कभी मिर्च गोलकी मांगने चले आते हैं। उन पड़ोसी महाशय को जब-जब कोई जरूरत होती है, वे भुजंग की तरह मुझसे आकर चिपट जाते हैं। गोया कि मैं आदमी नहीं बल्कि चंदन का पेड़ होऊं। उनका मेरे घर आना-जाना ऐसे होता है, जैसे मेरा घर नहीं, कोई धर्मशाला हो। ऐसे पड़ोसी मुझे मिले हैं, जिनको दिन भर में मुझसे दसियों बार काम पड़ता है। 'भाई साहब! भाई साहब!' कह-कह कर वे मुझे चूना लगाते रहते हैं। कभी-कभी तो मुझे लगता है, जैसे मैंने इन पड़ोसी महाशय को गोद लिया हुआ है। और वे मेरे बच्चे सरीखे हैं। वाह रे भाई! मान-न-मान मैं तेरा मेहमान। कभी 'हम बाहर जा रहे हैं, जरा घर देखिएगा।' कभी 'जरा बाइक की चाबी दीजिएगा बच्चे को स्कूल छोड़ने जाना है।' तो कभी 'बाजार जा रहे हैं, जरा मेरा फलना-ढिमकाना सामान भी लेते आइएगा।' अगर कभी थोड़ी नाराजगी मैं जताता तो दांत निपोरते हुए बोलते, 'अब एक पड़ोसी ही तो दूसरे पड़ोसी के काम आता है!' किसी दिन आकर पूछते हैं, 'भाई आपके पास कैंची होगी?' तो किसी रोज कहते, 'भाई साहब आपके पास रस्सी तो होगी?' मन आता है कि कह दूं, 'जिस भी चीज की जरूरत पड़े, वो आपको मुझसे ही चाहिए होती है। भला मैं आपूर्ति मंत्रालय में काम तो नहीं करता कि हर चीज का जुगाड़ करके आपके लिए रखा होऊं। भाई मैंने आपका ठेका थोड़ी न लेकर रखा है।' अभी बीते दिनों उन्हीं पड़ोसी का खल चोरी हो गया। वे मुझ पर झल्लाने लगे, 'आप के भरोसे घर छोड़कर गया था, देखिए मेरा खल चोरी हो गया।' मन में आया उसी खल में उन्हें कूट दूं। कह दूं कि आपने मुझे अपना खरीदा हुआ नौकर समझ लिया है क्या, जो मैं आपकी चाकरी करूंगा।

पता नहीं कब मेरा पिंड छूटेगा इन महाशय से! भगवान बचाए ऐसे पड़ोसी से। *

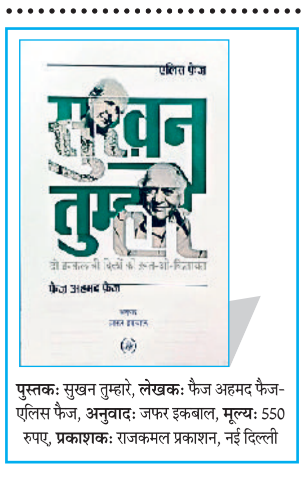

पुस्तकः सुखन तुम्हारे, लेखकः फैज अहमद फैज-एलिस फैज, अनुवादः जफर इकबाल, मूल्यः 550 रुपए, प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

दो दिलों की खत-ओ-किताबत

गजलों-नज्मों का शायद ही कोई ऐसा कद्रदान होगा, जो फैज अहमद फैज के नाम से नावाकिफ हो। अपनी शायरी में इंकलाबी तेवर और हुकूमत की बंदिशों को चुनौती देने वाले फैज के भीतर एक नाजुक दिल पति और बेहद जज्बाती पिता भी मौजूद था, इसकी बानगी उनके द्वारा लिखे उन खतों में दिखती है, जिनको उन्होंने कैद के दौरान अपनी पत्नी और बच्चों को लिखे थे। हाल में छपकर आई किताब 'सुखन तुम्हारे' में फैज के द्वारा लिखे गए 135 खत और उनकी पत्नी एलिस के द्वारा लिखे गए 178 खतों को संकलित किया गया है। वर्ष 1951 में पाक सरकार द्वारा गैर कानूनी तौर पर गिरफ्तार किए गए फैज, करीब चार वर्ष तक जेल में रहे। इस दौरान फैज और एलिस के बीच हुई खत-ओ-किताबत का महत्व किसी ऐतिहासिक दस्तावेज से कम नहीं है। यहां गौर करने वाली बात है कि फैज की गिरफ्तारी ने उन्हें बेबस नहीं और मजबूत बना दिया था। 17 जुलाई 1952 को लिखे खत में वह कहते हैं, 'यह जख्म बहुत अचानक, बहुत बेसबब लगा है लेकिन इसे सहने का बल मुझमें है। और इसके सामने भी मेरा सिर नहीं झुकेगा।' 24 अगस्त 1954 को एलिस, फैज को लिखे खत में भीगे जज्बातों से उनकी गैरमौजूदगी को महसूस करती हैं, 'जब मीजू ने केक काटा, उसने अपना मुंह बना लिया। आंखें बंद कीं और उस चीज की दुआ मांगी, जिसके लिए हम सब मांग रहे थे- खुदा तुम्हें हमारे पास घर भेज दें।' कह सकते हैं इस किताब में एक इंकलाबी शायर और उनकी पत्नी के व्यक्तित्व का बिल्कुल नया पहलू हमारे सामने उजागर होता है। *

लघुकथा / डॉ. रंजना जायसवाल

डुबकी

खोया-पाया कैंप में उस बूढ़े बाबा को बैठे छह घंटे हो गए थे। रात गहराती जा रही थी। अभी तक उन्हें कोई ढूंढने भी नहीं आया था। बाबा की आंखें एक आशा के साथ हर आहट के साथ दरवाजे तक जातीं, लेकिन वह निराश होते। कैंप के कर्मचारी की ड्यूटी बदलने का समय हो गया था। नए कर्मचारी ने पानी का गिलास पकड़ाते हुए बाबा से पूछा, 'आप कहां से आए हैं?'

'बेटा काफी दूर से आए हैं।'

'कुछ नाम तो होगा।'

'नाम...' बाबा ने याद करने की कोशिश की।

'किसके साथ आए हैं?'

'कलुवा, हमारा इकलौता बेटा'

'कुंभ नहाए आए थे?'

'हमार बेटवा ब्याह के दस बरस के बाद पैदा हुआ था। उसकी अम्मा मन्नत की रही, गंगा मैया को साड़ी चढ़ाएगी पर परमात्मा को कुछ और ही मंजूर था। अब जइबे तब जइबे करते-करते बख्त निकल गया। उसकी अम्मा ने मरते बख्त कसम ली थी। बचुवा के साथ मन्नत उतारे आए रहे। कुंभ नहाए लेब और मन्नत भी उतार देब।'

'बेटा कहां है बाबा?'

'हमसे बोला कुछ खाए का सामान लेने जाए रहे। इहां बैठे रहो हम अबही आत है।'

'फिर?'

'हमको बैठाकर पता नहीं कहां चला गवा? पुलिस वाले हमको इहां पहुंचा गए। बेचारा कितना परेशान हो रहा होगा।' बाबा की आंखों में अपने बेटे कलुवा के लिए चिंता उभर आई। कर्मचारी समझ चुका था, बीते कुछ दिनों में बाबा जैसे न जाने कितने लोग अपनों की तलाश और इंतजार में भटक रहे थे। 'बाबा, दस बार माइक पर कलुवा का नाम पुकारा जा चुका है। फोन नंबर याद है उसका?'

'फोन?'

'वापसी कब थी?'

'छः बजे की टरेन थी।'

'पर बाबा अब तो नौ बज रहे हैं।'

'नौ!' बाबा की आंखों के जुगनू धप्प पड़ गए।

'कलुवा आता ही होगा। हमें लिए बिना कैसे जाएगा?'

बाबा ने धीरे से बुदबुदाया। सामने गंगा मैया मंद-मंथर गति से बह रही थी। वह एक और पाप की साक्षी थी। जिसे कोई डुबकी धुल नहीं सकती थी। *

मध्य प्रदेश का प्राणपुर गांव

तमिलनाडु स्थित औरोविले गांव

वैसे तो पर्यटन के लिहाज से अपने भारत देश में अलग-अलग तरह के बेशुमार स्थल मौजूद हैं। लेकिन अगर आप बिल्कुल अनोखे और सुकून भरे पर्यटन स्थल घूमना चाहते हैं तो आपको कुछ विशिष्ट पर्यटन गांवों का रुख करना चाहिए। यहां बता रहे हैं देश के कुछ ऐसे खूबसूरत गांवों के बारे में, जो आपके लिए परफेक्ट ग्राम्य-पर्यटन स्थल हो सकते हैं।

गांवों में मिलेगी सुकून की छांव

टूरिस्ट प्लेसेस
समीर चौधरी

आमतौर पर माना जाता है कि गांवों में सुविधाओं की कमी होती है। इसीलिए शहर के लोग वहां जाना पसंद नहीं करते हैं। लेकिन आपको जानकर अच्छा लगेगा कि कुछ प्रदेशों के चुने हुए गांवों को विशिष्ट पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। जहां आप आधुनिकता और शहरी शोर-शराबे से दूर शांत, स्वच्छ और सुकून भरा अनुभव पा सकते हैं। लद्दाख की पहाड़ियों और छत्तीसगढ़ के जंगलों से लेकर, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश तक में कई ऐसे गांव हैं, जो विरासत और प्रकृति को सुरक्षित रखे हुए हैं। अपनी इसी विशेषता के कारण यह उन पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं, जिनकी ग्रामीण जीवनशैली, संस्कृति व इतिहास में दिलचस्पी होती है। ऐसे ही कुछ गांवों के बारे में जानिए।

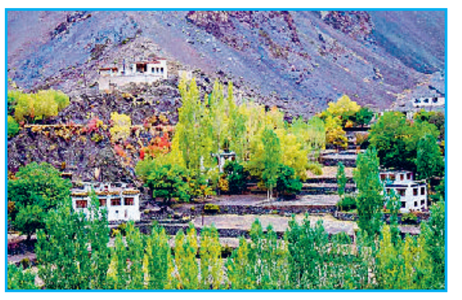
खूबसूरत वादियों के बीच स्थित लद्दाख का तार गांव

छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में स्थित धुडमारास गांव

सावरवानी-लाड़पुरा खास-प्राणपुर, मध्य प्रदेश: मध्य प्रदेश के ये तीन गांव आपको ग्रामीण भारत की सुंदर छवियों से रूबरू कराते हैं। प्राणपुर, सावरवानी व लाड़पुरा खास गांवों को वर्ष 2024 में सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों के रूप में सम्मानित किया जा चुका है। सावरवानी, आपको गोंड आदिवासी जीवन का अनुभव कराता है। यहां आरामदायक होमस्टे और सुंदर फार्मलैंड्स हैं। लाड़पुरा आपको विश्वसनीय बुंदेली एहसास से आकर्षित करता है। यहां के परंपरागत घर व हाथ से पेंट की गईं खूबसूरत दीवारें पर्यटकों को मोहित करती हैं। प्राणपुर, भारत का पहला क्राफ्ट हैंडलूम पर्यटन गांव है, जहां लगभग 900 बुनकर हैं, जो चंदेरी कपड़ा बुनने की कला में माहिर हैं। इन गांवों में आप क्राफ्ट वर्कशॉप्स, फॉरेस्ट वॉक, साइकिलिंग ट्रेल्स और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनुभव कर सकते हैं। ग्वालियर एयरपोर्ट से प्राणपुर 240 किमी. और लाड़पुरा खास 123 किमी. की दूरी पर है, जबकि जबलपुर से सावरवानी की दूरी 220 किमी. है।

उत्तर प्रदेश का कारिकोट गांव

तार गांव, लद्दाख: लद्दाख क्षेत्र में इस गांव को पहला सीसीए (कम्युनिटी-डिक्लेयर्ड कंजरवेशन एरिया) घोषित किया गया। लद्दाख का यह खूबसूरत गांव भी पर्यटन मंत्रालय की भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव की 2024 की सूची में शामिल हो चुका है। इसके संरक्षित क्षेत्र का प्रबंधन स्थानीय समितियां करती हैं, जोकि अपने प्राकृतिक संसाधनों, संस्कृति व परंपराओं को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी निभाती हैं। इनके पास समुदाय की निगरानी वाला पर्यटन, शून्य-प्लास्टिक अभियान और लद्दाखी सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण का भी दायित्व है। यहां आप ऊंचाई पर ट्रैकिंग, प्राचीन मठों को देख सकते हैं और ईको-होमस्टे में ठहर सकते हैं। यहां आने के लिए निकटतम एयरपोर्ट लेह है, जहां से तार लगभग 85 किमी. के फासले पर है।

कारिकोट गांव, उत्तर प्रदेश: उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में स्थित कारिकोट गांव को इंडियन सब-कॉन्टिनेंट रेस्पॉन्सिबल टूरिज्म अवार्ड 2025 (पीस, अंडरस्टैंडिंग एंड इन्क्लूसिविटी) से सम्मानित किया जा चुका है। स्थानीय थारू आदिवासी समुदाय के प्रयासों से इस गांव में होमस्टे, क्रॉस-बॉर्डर ईको-टूरिज्म व सांस्कृतिक अनुभव को प्रोत्साहित करने के साथ ही देशज क्राफ्ट, खान-पान व लोककला को पुनर्जीवित किया गया है, जिससे यह गांव थारू विरासत का लाइव म्यूजियम बन गया है। आप यहां खासतौर से विलेज वॉक, स्थानीय खान-पान, हस्तकला ट्रेल, झील के किनारे पक्षियों को देखने के साथ ही स्थानीय कहानी सुनाने के आयोजनों का अनुभव कर सकते हैं। इससे निकटतम एयरपोर्ट लखनऊ है, जहां से यह गांव लगभग 200 किमी. दूर है।

औरोविले गांव, तमिलनाडु-पुड्डुचेरी: औरोविले गांव वैसे तो तमिलनाडु में है, लेकिन इसका कुछ हिस्सा पुड्डुचेरी में भी है। यह भारत में स्थित एक अंतरराष्ट्रीय टाउनशिप है, जिसे यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त है। इसकी भूमि एक जमाने में कटाव के कारण बेकार हो गई थी, लेकिन अब दशकों के वनीकरण, ईको-आर्किटेक्चर और वेस्ट-फ्री सिस्टम से फिर हरी-भरी हो गई है। यहां पर आप मैत्री मंदिर देख सकते हैं। इसके अलावा सस्टेनेबल-लिविंग वर्कशॉप, पॉटरी, वीविंग और योग सत्र में हिस्सा लेने के साथ ही 3,000 एकड़ में फिर से लगाए गए वन में साइकिलिंग का रोमांचक अनुभव ले सकते हैं। औरोविले गांव चेन्नै एयरपोर्ट से लगभग 140 किमी. और पुड्डुचेरी से तकरीबन 11 किमी. की दूरी पर स्थित है।

धुडमारास गांव, छत्तीसगढ़: छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में धुर्वा कबीले द्वारा संचालित यह पर्यटन गांव ईको-फ्रेंडली अनुभव प्रदान करता है, जैसे- बैंबू राफ्टिंग, कयाकिंग और ट्रैकिंग। यहां सोलर-पॉवर इंफ्रास्ट्रक्चर है। वन संरक्षण प्रयासों के कारण परंपरागत जल स्रोतों को दुरुस्त किया गया है और स्थानीय तौर पर निर्मित होम स्टे भी हैं। इस गांव में आदिवासी संस्कृति, परंपरागत शिल्प व साल वन ट्रेल्स का आनंद लेने के साथ ही लोक संगीत और स्थानीय खेतों से मेज तक जायकेदार भोजन का अनुभव ले सकते हैं। सतत पर्यटन विकास के लिए धुडमारास गांव का चयन यूएनडब्लूटीओ बेस्ट टूरिज्म विलेज अपग्रेड प्रोग्राम 2024 में किया गया था। यहां से निकटतम एयरपोर्ट जगदलपुर है, जहां से यह गांव लगभग 35 किमी. के फासले पर है। *

भय को जब करेंगे पराजित तब मिलेगी मनचाही सफलता

कई बार हमारे भीतर कुछ ऐसे डर समा जाते हैं, जो सफलता और खुशहाल जीवन की राह में बड़ी रुकावट बन जाते हैं। कौन से हैं ये डर और इनसे कैसे निपटा जाए, मनचाही सफलता पाने के लिए आपको जरूर जानना चाहिए।

सेल्फ मोटिवेशन / शिखर चंद जैन

डर सफलता की राह में सबसे बड़ी अड़चन होती है। 'जो डर गया समझो मर गया', 'डर के आगे जीत है।' ये कुछ पॉपुलर कोटेशंस या फिल्मी डायलॉग हैं, जिन्हें आपने कहीं न कहीं पढ़ा या सुना होगा। सवाल है कि आखिर ये कौन से डर हैं, जिनसे उबरना जरूरी है और इनसे कैसे उबरें, ताकि आप सफल, समृद्ध जीवन की ओर बढ़ सकें।

पैसे न होने का डर: अमीर हो या मध्य वर्ग के लोग, पैसों की कमी होने से सब डरते हैं। मध्य और निम्न वर्ग को और ज्यादा गरीब होने का डर सताता है। पैसे की कमी का डर व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं, जोखिम लेने की क्षमता और हिम्मत को खत्म कर देता है। सबसे पहले निर्णय की शक्ति का उपयोग करके इस डर को दूर करें। अपनी चेतना को हमेशा धन की कमी से हटाकर धन की अधिकता पर केंद्रित करें। धन कमाने के तरीकों के बारे में सोचें, न कि गरीबी के परिणामों के बारे में। अपनी आय बढ़ाने का एक स्पष्ट और लिखित लक्ष्य और योजना बनाएं। जब आपके पास काम करने की एक ठोस योजना होती है, तो डर की जगह आत्मविश्वास ले लेता है। हमेशा यह सोचें कि आपकी आंतरिक खुशी भौतिक संपत्ति से अधिक महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही पूरी मेहनत से धन कमाने के अपने प्रयास जारी रखें।

आलोचना का डर: यह डर अकसर लोगों को नए विचार आजमाने, जोखिम लेने या अपने सपनों का पीछा करने से रोकता है, क्योंकि उन्हें लगता है कि दूसरे लोग क्या सोचेंगे या कहेंगे? इस डर को दूर करने का आसान तरीका यही है कि दूसरों की राय की परवाह न करें। लोग अकसर आपकी आलोचना इसलिए करते हैं, क्योंकि या तो वे खुद डरे हुए होते हैं या फिर आपसे ईर्ष्या करते हैं। अपने कार्यों और निर्णयों के लिए खुद को जवाबदेह बनाएं। आत्म-अनुशासन आपको बाहरी आलोचनाओं से प्रभावित हुए बिना अपने लक्ष्य पर टिके रहने में मदद करता है। आलोचना का डर आपकी रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति को खत्म कर देता है। इसलिए खुद को रचनात्मक कार्यों में लगाएं।

बीमारी-मृत्यु का डर: यह डर अकसर किसी क्रॉनिक बीमारी या नियमित शारीरिक दर्द से उत्पन्न होता है। कई बार किसी नजदीकी की बीमारी देखकर भी ऐसा होता है। यह डर अकसर मानसिक तनाव पैदा करता है। इसे दूर करने के लिए बीमारी के बारे में लगातार सोचना या बात करना बंद करें। अपने मन को सकारात्मक और स्वस्थ विचारों से भरें। स्वास्थ्यवर्धक जीवनशैली अपनाएं। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और पर्याप्त आराम पर ध्यान केंद्रित करें। अपनी दिमागी शक्ति का उपयोग करें। यह विश्वास करें कि एक स्वस्थ दिमाग एक स्वस्थ शरीर का निर्माण करता है। अपनी मानसिक ऊर्जा को ठीक होने या स्वस्थ रहने में लगाएं, न कि बीमार पड़ने के डर में।

रिश्ते खोने का डर: यह डर किसी प्रियजन, जीवनसाथी या परिवार के सदस्य से बिछड़ने या उन्हें खोने के भय से जुड़ा होता है। इसे दूर करने के लिए आत्म-प्रेम और आत्मविश्वास बढ़ाएं। जब आप खुद से प्यार करते हैं और खुद पर भरोसा करते हैं, तो आप दूसरों पर भावनात्मक निर्भरता कम कर देते हैं। ईर्ष्या इस डर का सबसे बड़ा संकेत है। तर्कसंगत रूप से अपनी असुरक्षाओं को पहचानें और उन्हें तर्क से दूर करें। यह समझें कि आप किसी को नियंत्रित नहीं कर सकते। रिश्ते विश्वास और आपसी सम्मान पर टिके होते हैं, डर पर नहीं।

बुढ़ापे का डर: यह डर अकसर उम्र बढ़ने के साथ आने वाली शारीरिक कमजोरी, शारीरिक आकर्षण में कमी, आर्थिक अभाव और मृत्यु की संभावना से जुड़ा होता है। इसे दूर करने के लिए बुढ़ापे को अनुभव और ज्ञान के रूप में देखें। उम्र बढ़ने को कमजोरी के रूप में नहीं, बुद्धिमत्ता के संचय के रूप में स्वीकार करें। शारीरिक और मानसिक रूप से सक्रिय रहकर इस डर का मुकाबला करें। नए कौशल सीखें और जीवन में उत्साह बनाए रखें। अपनी आर्थिक सुरक्षा शुरू से ही सुनिश्चित करें। वित्तीय योजना बनाकर बुढ़ापे में संभावित गरीबी के डर को कम करें।

इनमें से कोई डर हो या कोई अन्य प्रकार का डर, सभी डरों को दूर करने का मूल मंत्र 'इच्छाशक्ति' और 'सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण' है। इन दो मूल मंत्रों को अपनाकर आप भयमुक्त खुशहाल जीवन जी सकते हैं। *

भारत की प्राचीनतम और महानतम नदियों- गंगा, नर्मदा की तरह ही ताप्ती नदी का भी भारतीय संस्कृति, भूगोल एवं अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। ताप्ती नदी से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों के बारे में बता रहे हैं, जिनसे आप इस नदी की महत्ता को और भी अच्छे से जान-समझ पाएंगे।

गंगा-नर्मदा जैसी महत्वपूर्ण पश्चिमवाहिनी ताप्ती नदी

नदी गाथा / वीना गौतम

ताप्ती जिसे तापी नदी भी कहते हैं, भारत की उन चुनिंदा बड़ी पश्चिम वाहिनी नदियों में से है, जो मध्य भारत से निकलकर अरब सागर में गिरती है। यह विशेषता इसे गंगा जैसी विशाल पूर्व वाहिनी नदी और नर्मदा जैसी महान पश्चिम वाहिनी नदी के समकक्ष बनाती है। भौगोलिक, आर्थिक, पारिस्थितिक और सांस्कृतिक स्तरों पर इस नदी की भूमिका अत्यंत व्यापक है।

ताप्ती नदी के तट पर स्थित मंदिर

उद्गम-प्रवाह: ताप्ती नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के बेतूल जिले के पास सतपुड़ा पर्वतमाला में है। यहां से लगभग 724 किलोमीटर की यात्रा तय करते हुए महाराष्ट्र और गुजरात से गुजरती यह नदी अंततः अरब सागर में जा मिलती है। यह पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। इस नदी की सहायक नदियां इसकी जलराशि को संपन्नता प्रदान करती हैं। ताप्ती की सहायक नदियों में पूर्णा, गिर्णा, वाघुर और अंजली जैसी नदियां शामिल हैं। ताप्ती को गंगा और नर्मदा के समकक्ष महत्वपूर्ण नदी इसलिए माना जाता है, क्योंकि यह भी इन्हीं की तरह विशाल नदी घाटी प्रणाली बनाती है। ताप्ती नदी का जलभरण क्षेत्र लगभग 65 हजार वर्ग किलोमीटर है।

जहां तक इसके बहाव की गति की बात है, तो शुष्क मौसम में इसका बहाव 0.3 से 0.6 मीटर प्रतिसेकेंड होता है, जबकि मानसून के दौरान ताप्ती नदी का बहाव 1.5 से 3 मीटर प्रति सेकेंड तक पहुंच जाता है। ताप्ती का औसत वार्षिक प्रवाह 17 से 18 बिलियन घन मीटर आंका गया है। इसका अधिकांश भाग जून से सितंबर यानी मानसून के दौरान प्राप्त होता है। ताप्ती नदी की वर्षा पर निर्भरता करीब 75 फीसदी है और शेष 25 फीसदी जलराशि इसके भूजल, पुनर्भरण और सहायक नदियों के जरिए प्राप्त होता है।

संस्कृति की वाहक: जिस तरह गंगा नदी-घाटी में प्राचीन सभ्यताएं विकसित हुईं, वैसे ही ताप्ती घाटी में भी आदिवासी समाज, कृषि संस्कृतियां और व्यापारिक नगर विकसित हुए। गंगा और नर्मदा की तरह ताप्ती को भी अनेक स्थानों में पवित्र नदी का दर्जा प्राप्त है और इसके किनारे मेले और पवित्र स्नानों से संबंधित पर्व आयोजित किए जाते हैं। देश की दूसरी पवित्र नदियों की तरह ताप्ती के तट पर भी अनेक महत्वपूर्ण मंदिर स्थित हैं।

अर्थव्यवस्था में योगदान: चूंकि ताप्ती पश्चिम वाहिनी नदी है, इसलिए इसमें ढाल अपेक्षाकृत ज्यादा है। यही कारण है कि इसका प्रवाह पूर्वगामी नदियों के मुकाबले ज्यादा है, जिससे जल विद्युत उत्पादन के लिए ताप्ती महत्वपूर्ण नदी मानी जाती है। इसके पानी का उपयोग सिंचाई के लिए, पेयजल के रूप में, औद्योगिक उपयोग हेतु तथा विद्युत उत्पादन आदि में किया जाता है। ताप्ती नदी की मिट्टी जलोढ़ है, जो अत्यंत उपजाऊ होती है। इस कारण इसके परिक्षेत्र में दोहरी फसल प्रणाली सहजता से संभव है और किसान अपेक्षाकृत कम सिंचाई लागत में खेती कर पाते हैं। ताप्ती बेसिन एक स्वतंत्र और बड़ा जलग्रहण क्षेत्र है, जो लाखों लोगों की कृषि, पेयजल और औद्योगिक आवश्यकताओं को पूरा करती है। यह गुण ही इसे पश्चिम की नर्मदा और पूर्व की गंगा जैसी नदियों के समकक्ष बनाती है। ताप्ती घाटी कपास, सोयाबीन, गन्ना, केला और विभिन्न तरह की दालों की खेती के लिए जानी जाती है। गंगा की तरह ताप्ती नदी भी कृषि आधारित जीवनरेखा की भूमिका निभाती है। ताप्ती नदी कृषि एवं ग्रामीण रोजगार का भी बड़ा आधार बनाती है।

ताप्ती नदी के किनारे स्थित शहर विशेष रूप से कपड़ा, रसायन, हीरा कटाई और खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के लिए प्रसिद्ध हैं। इससे लाखों रोजगार और शहरी विकास को बल मिलता है। इसी नदी के किनारे सूरत जैसा औद्योगिक और व्यापारिक शहर स्थित है।

समृद्ध पारिस्थितिक तंत्र: ताप्ती नदी में मीठे पानी की अनेक महत्वपूर्ण प्रजातियों की मछलियां पाई जाती हैं, जिनमें रोहू, कतला और मृगल शामिल हैं। सतपुड़ा क्षेत्र से गुजरते समय यह नदी कई वन क्षेत्रों को सिंचित करती है, जिससे वन क्षेत्रों का पारिस्थितिकी तंत्र गतिशील रहता है। ताप्ती नदी के डेल्टा क्षेत्र में पक्षियों की कई प्रजातियां पाई जाती हैं और प्रवासी पक्षियों का भी यह आश्रय स्थल बनती है। ताप्ती बेसिन में नदी का पानी आस-पास के जलस्रोतों को भरता है, जिससे कुओं, नलकूपों आदि में पूरे साल जल उपलब्ध रहता है।

मौजूद हैं कई संकट: देश की अन्य बड़ी नदियों की तरह ताप्ती भी कई तरह की औद्योगिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रही है। यह भी औद्योगिक प्रदूषण से ग्रस्त है। इस नदी में भी बड़े पैमाने पर शहरी अपशिष्ट आकर मिलता है तथा इसके आस-पास में भी अवैध रेत खनन आदि की घटनाएं होती रहती हैं। सबसे चिंताजनक बात यह है कि हाल के कुछ सालों में जलवायु परिवर्तन और वर्षा की अनिश्चितता की भी यह नदी शिकार हुई है। यही नहीं इस सबके चलते ताप्ती नदी की गुणवत्ता और जैव विविधता दोनों प्रभावित हुई है। ताप्ती नदी पर मंडरा रहे इन संकटों के मद्देनजर इसके संरक्षण के लिए कई कदम उठाए गए हैं। जैसे अपशिष्ट जलशोधन संयंत्र, नदी किनारे हरित पट्टी का विकास, सामुदायिक जागरुकता और सतत जल प्रबंधन। *

पिछले महीने से सोनी एंटरटेनमेंट चैनल और सोनी लिव पर एक नया शो शुरू हुआ है- 'व्हील ऑफ फॉर्चून', जिसे होस्ट कर रहे हैं अक्षय कुमार। इस शो को उन्होंने क्यों एक्सेप्ट किया? इस शो, अपकमिंग फिल्मों के साथ-साथ अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ से जुड़े सवालों पर अक्षय कुमार ने खुलकर जवाब दिए हैं इस खास मुलाकात में।

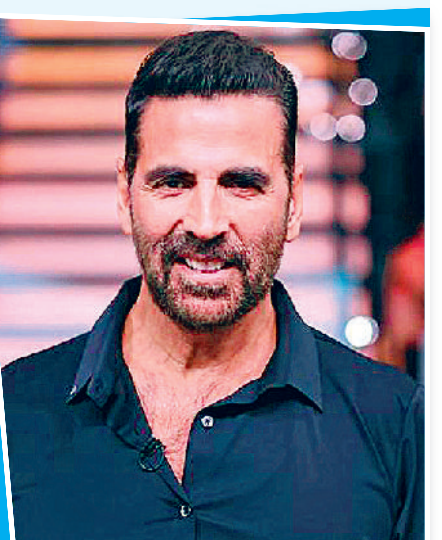

जो आपकी तकदीर में है वह जरूर आपके पास आएगा: अक्षय कुमार

खास मुलाकात
आरती सक्सेना

हाल में ही अक्षय कुमार टीवी और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर एक ऐसा रियालिटी शो लेकर आए हैं, जो पहले से ही 60 देशों में पॉपुलर हो चुका है। यह अमेरिका का नंबर वन रियालिटी शो है। इस शो का नाम 'व्हील ऑफ फॉर्चून' है। गेम का पूरा फॉर्मेट अक्षय कुमार खुद बतौर होस्ट इस शो की शुरुआत में समझाते हैं, साथ ही मजाकिया अंदाज में सबको हंसाते नजर आते हैं। इस शो के अलावा अक्षय की फिल्म 'हैवान' रिलीज होने वाली है, जबकि एक और फिल्म 'भूत बंगला' अप्रैल में रिलीज होगी। दोनों ही फिल्मों को प्रियदर्शन ने डायरेक्ट किया है। अक्षय का अपने इस शो और आने वाली फिल्मों को लेकर क्या कहना है? और भी पर्सनल सवालों के जवाब अक्षय कुमार ने एक मुलाकात में बेबाक अंदाज में दिए। पेश है अक्षय कुमार से हुई लंबी बातचीत के प्रमुख अंश-

आप इन दिनों सोनी एंटरटेनमेंट चैनल पर टेलिकास्ट हो रहे गेम शो 'व्हील ऑफ फॉर्चून' को होस्ट कर रहे हैं। इस गेम शो को होस्ट करने के पीछे खास वजह क्या है?

मुझे यह शो बहुत ही दिलचस्प लगा, क्योंकि इसमें पार्टिसिपेंट्स को ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने का मौका मिलता है। बहुत ज्यादा दिमाग नहीं लगाना है। अगर तकदीर ने साथ दिया तो कंटेस्टेंट्स, कुछ मिनटों में लाखों रुपए और कई अच्छे और महंगे गिफ्ट जीत सकते हैं। इस शो का फॉर्मेट सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी पॉपुलर है। पर्सनली मुझे भी इस शो में कई सारी खूबियां नजर आईं, इसलिए मैंने बतौर होस्ट यह शो करना स्वीकार किया।

अमिताभ बच्चन ने टीवी पर 'कौन बनेगा करोड़पति' और सलमान खान ने 'बिग बॉस' जैसे सुपरहिट शो के कई सीजंस सफलतापूर्वक होस्ट किए हैं। ऐसे में क्या आपको इन दोनों कलाकारों से कंपैरिजन का भी प्रेशर है?

नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मैं इस मामले में बहुत पॉजिटिव हूं। मुझे कुछ करना है तो मैं करता हूं, नेगेटिव बातें सोच कर अपने आप को कमजोर नहीं बनाता। मुझे 'व्हील ऑफ फॉर्चून' का कॉन्सेप्ट दिलचस्प लगा तो मैंने शो होस्ट करना मंजूर कर लिया। जहां तक अमित जी और सलमान का सवाल है तो अमित जी मेरे लिए फादर फिगर हैं, सलमान मेरा अच्छा दोस्त है। दोनों ही लोग अपना काम बहुत अच्छे से कर रहे हैं। मेरा उनके साथ कोई कॉम्पिटिशन नहीं है। मैं इस शो को एंज्वॉय कर रहा हूं।

अगर 'व्हील ऑफ फॉर्चून' में आप होस्ट की जगह पार्टिसिपेंट होते तो आप दिमाग से खेलते या नसीब के भरोसे गेम को आगे बढ़ाते?

यह शो दिमाग से ज्यादा तकदीर के साथ खेला जा सकता है। शो में दिमाग सिर्फ इतना ही लड़ा सकते हैं कि गेम के दौरान पूछे गए सवालों का जवाब सोच-समझ कर दें, बाकी जब व्हील घूमता है तो जीरो पर भी रुक सकता है और एक करोड़ पर भी। मैंने इस शो में कई लोगों को लाखों रुपए जीतते हुए देखा है। सो अगर मैं कंटेस्टेंट होता तो मुझे भी सही जवाब देना पड़ता, बाकी किस्मत कितना साथ देती है, वह तो अपने हाथ में नहीं होता है।

'व्हील ऑफ फॉर्चून' में अक्षय कुमार का निराला अंदाज

अपने इस शो में क्या आप किसी खास बॉलीवुड एक्टर को बुलाना चाहेंगे?

अगर बॉलीवुड एक्टर को अपने शो में बुलाने की बात करें तो मैं सलमान, शाहरुख, विद्या बालन, सुनील शेट्टी, संजय दत्त इन सभी को अपने शो में बुलाना चाहूंगा।

आप तकदीर पर ज्यादा विश्वास करते हैं या मेहनत पर?

मेरा मानना है अगर आपकी तकदीर में कुछ नहीं है तो आप लाख कोशिश कर लो वह नहीं मिलेगा और अगर तकदीर में कुछ है तो आप वो पा ही लेंगे। मैं जब छोटा था तो अपने पापा के कंधों पर चढ़कर राजेश खन्ना साहब की शूटिंग और उनका बंगला देखने जाया करता था, मुझे क्या पता था कि एक दिन मेरी उनकी बेटी से ही शादी हो जाएगी। इसलिए मेरा मानना है कि जिंदगी में कुछ भी असंभव नहीं है। जो आपकी तकदीर में लिखा है, वह जरूर आपके पास आएगा।

बीते कुछ समय में आपकी कई फिल्में असफल रहीं। क्या फ्लॉप फिल्मों ने आपको निराश किया?

फ्लॉप फिल्में कुछ समय के लिए दुःखी जरूर कर देती हैं, लेकिन जिंदगी में कभी मैं निराश नहीं होता हूं। करियर की शुरुआत में मैंने 12 से 15 फिल्में एक साथ फ्लॉप दी थीं। लेकिन बाद में तकदीर ने पलटा खाया और मेरी कई फिल्में हिट हो गईं, जैसे 'खिलाड़ी', 'मोहरा', 'मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी' एक्सेक्ट्रा। मेरा मकसद अपने किरदार के साथ पूरा न्याय करना है। फिर फिल्म फ्लॉप होती है या हिट, यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा।

आने वाली फिल्म 'हैवान' में आप नेगेटिव रोल कर रहे हैं, क्या यह आपकी हीरो वाली इमेज को नुकसान पहुंचा सकता है?

मेरे ख्याल में ऐसा होगा नहीं, क्योंकि दर्शक भी अपने हीरो को हर तरह के किरदार में देखना चाहते हैं। 'हैवान' में मैं एक बार फिर नेगेटिव रोल कर रहा हूं। मुझे ऐसा लगता है कि दर्शक मुझे इस फिल्म के किरदार में भी बतौर एक्टर खूब पसंद करेंगे। *

पैसों से ज्यादा महत्वपूर्ण प्यार और रिश्ते

अक्षय कुमार के लिए लाइफ में पैसा ज्यादा महत्वपूर्ण है या प्यार, पूछने पर उनका जवाब होता है, 'मेरी नजर में लाइफ में पैसों से ज्यादा प्यार और रिश्तों की अहमियत है। मुझे अपनी बेटी के साथ वक्त बिताना बहुत अच्छा लगता है। खाली वक्त में मैं घर पर अपने परिवार के लिए खाना भी बनाता हूं। अगर आपके अपने आप के साथ हैं तो आप मेहनत करके पैसा कमा सकते हैं, लेकिन पैसों से आप रिश्ते या प्यार नहीं खरीद सकते हैं।'